मोती बिखरे चौक में

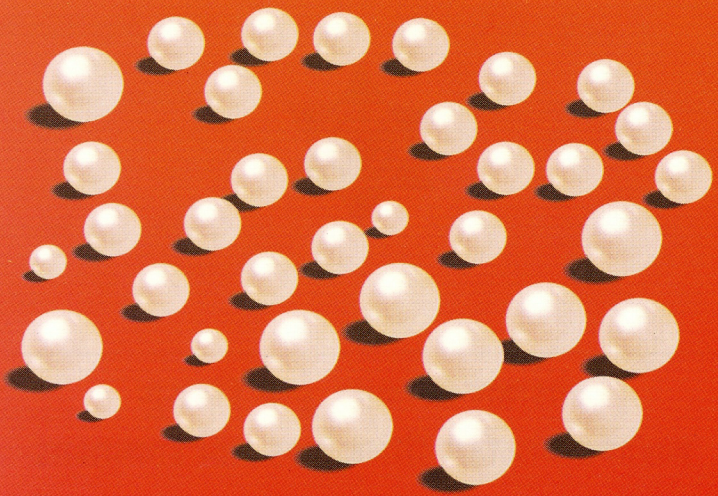

स्वामिश्रीजी

मोती बिखरे चौक में

26 जनवरी' 86 रविवार, विद्यानगर—गुणातीत ज्योत में
गुरुहरि प.पू. काकाजी द्वारा योगी परिवार पर बरसाये आशीर्वाद का भावानुवाद

गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज
साक्षात्कार दिन स्वर्णजयंती महोत्सव प्रकाशन

मोती बिखरे चौक में

प्रकाशकः
योगी डिवावईन सोसाईटी, दिल्ली
'अनिर्देश', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,
अशोक विहार-III, दिल्ली-110 052 (भारत)

प्रथम आवृत्तिः
13 मार्च, 2000

प्रति : 2000

मूल्य : रू. 20/-

प्राप्ति स्थानः
योगी डिवाईन सोसाईटी
★ 'अनिर्देश', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,
अशोकविहार-III, दिल्ली-110 052 (भारत)
✆ 722 9327, 724 9327 ★ फैक्सः 721 9327
★ 6/डी, सोनावाला बिल्डींग्स, ताड़देव, मुंबई-400 007 (भारत)
✆ 308 2527, 309 4177 ★ फैक्सः 309 8643
★ 2437, N.Yeoman St., Waukegan, Chicago, Illinois-60087, USA
✆ : 847-336-6451 ★ Fax: 847-336-4575

टाईप सेटिंग
शायोका टाईप सेटिंग
उत्सवविहार, दिल्ली-110 081 (भारत)
फोन : 548 3035

मुद्रक :
मेहता प्रिन्टर्स
219, भारत नगर, दिल्ली-110 052 (भारत)

अर्पण

1952 की 3 फरवरी *को प.पू. काकाजी को हुए साक्षात्कार के बाद,*
धाम, धामी और मुक्तों को–भगवान, संत और सत्संगी को ही सत्य मानकर,
प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. कांतिकाका के परिवार ने
मिल कर अकल्पनीय कसनी सह करके
जीवन जीने की पहल करी
और.....
करीब डेढ सौ साल पहले महाराज ने वचनामृत अंत्य प्रकरण के 21 में
जो कहा था कि–
''ऐसे जो दृढ सत्संगी वैष्णव हैं, वे ही हमारे तो सगे संबंधी हैं
व
वही हमारी बिरादरी है,''
उसे सामूहिक रूप से प्रवर्ताया।
यूं इन्होंने 'गुणातीत समाज' का पौधा लगाया,
जो आज देश-विदेश में फला-फूला दिखाई पडता है।
इस गुणातीत समाज की अखंडता, एकता व एक सूत्रता
हमेशा बनी रहे, इस हेतु–
1986 की 26 जनवरी को प.पू. काकाजी द्वारा 'गुणातीत ज्योत'
के चौक में
योगी परिवार को दिया यह ***'मेग्नाकार्टा'***
गुणातीत कबीले के जिस परिवार में
मैं पला, खेला और अब तक निभ गया–
मेरे उन मुरब्बी और साथियों को–
गुणातीत समाज की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में
अंतर के पूज्यभाव,
प्रेम और ***हृदय की भावना कहुं या व्यथा?*** *–सहित अर्पण!*

साधु मुकुंदजीवनदास *के भावभरे*
जय स्वामिनारायण !

आमुख

विद्यानगर–गुणातीत ज्योत के चौक में
1986 की 26 जनवरी को
प.पू. काकाजी ने वृहद् गुणातीत समाज के नाम दिया आखिरी संदेश
व
ऐतिहासिक प्रवचन.....
सहज, आकस्मिक और अनायास फिसले अमृत आशिष–
उस स्मृति कुंभ को.....
जब-जब सुनते हैं–खेलते हैं तब–
बहुत कम समय में करी वह शाश्वत् और कालातीत बातों की गरिमा
हमारे हृदयाकाश और मन के झरोखे में आ खड़ी रहती है।
हम यदि उससे आँखें चुराने भी जायें, तब भी चुरा नहीं सकते।
वह परावाणी की प्रबल गूंज
हमारे अंतर की दीवारों के टकराती ही रहेगी।
इतना ही नहीं बल्कि–
हर बार उसमें से कोई नया ही अर्थ निकलता लगेगा।
और.....
मन लगा कर सुनने पर लगेगा कि सालों से वे जो बातें किया करते
पर,
सुनते रहने के बावजूद भी हम मूर्छित ही रहते थे;
सो–एक ज़ोर का झटका धीरे से देकर
हमें झंझोड़ने ही काकाजी ने यह प्रवचन किया होगा
और.....
इसी लिए तो ठीक 40वें दिन
हमें जाग्रत करने यकायक स्थूलरूप से वे अंतर्धान हो गए!
फिर भी, कौन कह सकेगा कि काकाजी हमें छोड़ कर चले गए ?
उनकी अति अमूल्य लाक्षणिक तस्वीरें,
संजीवनी सम उनके पत्र,
अंतर के अंधकार को हटाने वाले उनके लेख,
उनकी धून के चैतन्यस्पर्शी आंदोलन,
उनकी परावाणी की गर्जना

और सबसे अधिक तो–
जो उनके दिल की धड़कन थे
ऐसी मर्जी में मर-मिटने वाले जीवन मुक्तों व एकांतिकों द्वारा
प.पू. काकाजी अधिक व्यापक बनें हैं।
इस बात का सिर्फ हमें ही नहीं–
सभी को आज सतत् अहसास हो रहा है!
बेशक–वे तो तब भी,
ऐसे ही सत्य, अनंत व अपरिमित थे।
परन्तु जिन-जिनकी दृष्टि की क्षितिज जब-जब फैली
तब उन्हें वे उतने महान लगे।
मन की खिड़कियां खुलीं, तब उतने अधिक करीब नज़र आये।
बुद्धि के दायरे टूटे, तब उन्हें कुछ समझ पाने का अहसास हुआ।
फिर भी,
वे तो सदा ही पर के पर अथाह ही रहे!
और.....
हमारे बीच तो वे मानव के मानव ही रहे!!
ऐसे बहुरूपी गुरुहरि के किसी भी पहलू को हम कितना पहचान पायेंगे?
जो कुछ भी समझेंगे वह केवल मात्र चम्मच भर ही होगा।
दो बारी में करे **इस ऐतिहासिक परामर्श में**
कई रहस्य समाये हुए हैं।
हर तीन फरवरी को इसे सुन कर प.पू. काकाजी की स्मृति करके
भक्ति अदा करने का यह एक सुलभ साधन मात्र नहीं हैं,
बल्कि हमारे नित्य परीक्षण की अनोखी परखनली है।
इनकी करी बातों की **थोड़ी भी उपेक्षा करेंगे,**
तो–
हमारी प्राप्ति और स्थिति में बड़ा फर्क पड़ जाएगा,
इस बात की चेतावनी भी इन्होंने इन बातों में दी है।
यह प्रवचन तो **हमारे लिए 'मेग्नाकार्टा' है—हमारी आचारसंहिता है।**
उद्बोधन भले प्रासंगिक है,
परन्तु उसका मूल्य शाश्वत् है।
हम सब की प्रगति का यह मापदंड है।
बहुत ही दक्षता से,
काकाजी ने हमें इस प्रवचन द्वारा एक दर्पण देकर

हमारे निजी स्वरूप का–हमारी सच्ची आंतरिक अवस्था का
दर्शन कराने का प्रयास किया है।
सो,
इसकी प्रत्येक पंक्ति को एकाग्र मन से पढ़ कर,
दो पंक्तियों के बीच का रहस्य हमें ढूंढना है।
इसमें कहने का कुछ भी छूटा नहीं है,
फिर भी काफी कुछ ईशारे के तौर पर इंगित है।
श्रीजी और योगीजी महाराज की असीम कृपावर्षा से भीगी
उनके हृदय की मीठी महक है।
उनके हर शब्द से गुरुभक्ति टपकती है।
और उसके बावजूद–
उनकी निगाह में यदि हम थोड़े भी नीचे दिखाई पड़ते हैं,
तो वह, उन्हें कांटे की भांति चुभता भी है।
उनकी बातों में कोई भी कूट–चालाकी नहीं,
फिर भी अक्लमंदी जरूर है।
किसी की भी मोहब्बत या प्रभाव में फंसे बिना
उन्होंने हमारी कमियां खुली करी हैं
क्योंकि.....
वे शिष्यों के रागी नहीं, बल्कि भक्तों के अनुरागी थे।
प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी के साथ
अजोड़–अप्रतिम दिव्य एकता से वे जुड़े थे ही,
परन्तु
ऐसी ही भावात्मक एकता
गुणातीत समाज के सभी ज्योतिर्धरों और मुक्तों में भी व्यापक बने
उसके लिए उनका हृदय निरंतर तरसता रहा।
वे खुद मरजिये थे
और
वैसा ही–खुद जैसा ही सबको बनाने की उनकी अदम्य उत्कंठा थी।
उन्होंने खुद कोई एकाधिकार नहीं रखा था,
और
आध्यात्मिकता में किसी भी प्रकार के एकाधिकार का
यदि कोई दावा भी करता तो वह उन्हें डंक की भांति दुःखता।
वे हमेशा कहते को **चिदाकाश में कोई भी सीमा नहीं है।**

सहजानंदी सहजावस्था में कहीं भी
किसी भी प्रकार का भेद, फर्क या दायरे नहीं हैं।
और.....
ऐसी ही सदाबहार अलमस्ती से वे बोले हैं–जीये हैं।
एक ओर **इनकी आवाज़ में** केसरी सिंह का जोश है,
तो साथ ही–
केवल प्रभु का संबंध देख कर ही
निजी अस्तित्व को पिघाल देने की खानदानी और धन्यता भी है।
जहां एक ओर साथियों व चारों पंखुडियों के समाज के सहयोग से
हांसिल करी बुलंद कामयाबी का संतोष है;
तो दूसरी ओर अखंड़ जागृत रह कर
केवल **गुणातीत भावना वाला साधु बनने के**
एक मात्र **लक्ष्य पर पहुँचने की हमें आग्रहपूर्ण करी वात्सल्यभरी टोकनी भी है।**
हमारी नज़र इस ध्येय की ओर टिकी रहेगी तो,
अंतिम लक्ष्य पर सुख-सुख से, आनंद करते-करते पहुँचने की चाबी बता कर
उन्होंने हमारा हौंसला बढ़ाया भी है।
यूं इनके इस प्रवचन में
जिसे अंग्रेजी में 'एगनि और एक्सटेसी'
यानि कि **व्यथा और धन्यता कही जाए—**
इन दोनों की सहज अभिव्यक्ति है।
प्रवचन के दौरान उनके मुखारविंद का **अनोखा अट्टहास्य**
उनके भीतर छुपी अकल्पनीय वेदना को अनायास प्रगट कर जाता है।
और यहां–
जगजीत सिंह की गज़ल की एक पंक्ति सहज याद आती है–
'तुम इतना जो मुस्करा रहे हो, क्या गम है जिसको छुपा रहे हो!'
पर तब भी.....
उनके हृदय के भीतर कई भरम और मरम हमारे लिए तो
अब भी अगम्य ही रहे हैं।
क्योंकि–
हमारी दृष्टि सीमित है।
हमारी मति कुंठित है।
हमारी गति धीमी है।
और.....

इन सबका जोड़ हमारी वृत्ति!
उसे निर्मूल करके, दिव्य बनाने की अलख
उन्होंने हमारा ज़हर स्वयं घूंट–घूंट पीकर जगाई थी।
हमारे लिए उन्होंने स्व–स्वरूप की अलमस्ती भी मानो फैंक दी थी।
फिर भी,
उनके मुखारविंद का स्मित कभी भी गया नहीं।
प्राप्ति की मस्ती कभी भी क्षीण हुई नहीं।
वे तो हमेशा ऐसे ही रहे.....अन्दर और बाहर–
बिलकुल शुद्ध स्फटिक सम–निर्मल–पारदर्शक, पावन–कंचन समान.....
मानो सहजानंदी चेतना और गुणातीत का अंतरमन!
विचार को पायेंगे तो–
यह प्रवचन तो एक दिव्य चिनगारी है–आध्यात्मिक सोंटा है।
परन्तु, काकाजी ने इसे इतने तो हल्के हाथ से मारा है कि
हमें उसकी वेदना नहीं होने दी।
हमें थोड़ी भी पीड़ा हो
वो वे सह नहीं पाते थे–ऐसे भक्तवत्सल थे।
सो,
डंडे के जोर पर करी यह शिक्षा नहीं है,
बल्कि शिष्यों का श्रेय ही जिनके दिल में बसा है,
ऐसे आचार्य की यह प्रशिक्षा है।
यदि माानें तो–
हमारी सच्ची आध्यात्मिक दीक्षा है!
इसके गूढ़ार्थ हमारे वर्तने में आयेंगे–रोज़मर्रा के परीक्षण में आएंगे,
तभी हम गुणातीत भावना वाले सच्चे साधु बन पायेंगे
और
तभी महाराज की सेवा के अधिकारी बनेंगे
और तभी योगीजी महाराज प्रसन्न होंगे।
वर्ना तो.....सात्त्विक समृद्धि के–
प.पू. काकाजी के शब्दों में–'वैभवशाली सत्संग' के झूले में
हम दो सौ साल से झूलते ही रहे हैं ना?
और.....
इसी हेतु इस पुस्तिका को **'मोती बिखरे चौक में'** शीर्षक दिया है।
उन शब्दों रूपी बिखरे मोतियों को अब तो हम चुन–चुन कर

उनकी बहुमूल्य माला बना कर,
समग्र गुणातीत समाज को
आत्मीयता, सुहृद्भाव और सर्वदेशीय भावात्मक एकता से गूंथ लें,
यही इस शीर्षक और मुख पृष्ठ के चित्रण का मध्यवर्ती भावार्थ है।
समग्र गुणातीत समाज के मुक्त
केवल प्रभु के ही संबंध और बल से
सर्वत्र माहात्मयभरी अभेद दृष्टि व अविरोध वृत्ति से
एक दूसरों से आपस में गुंथ जाएं
ऐसी उनके अन्तर की अभिलाषा थी।
काकाजी कई बार कहते कि-
'हमारी भावना को हाथ-पांव आते हैं।'
वह 'हांथ-पांव' यानि ?
हम केवल मात्र कहकर भावना की अभिव्यक्ति करें
या
दूसरों के पास उसका प्रतिपादन करें
या
ऊपरी-दिखावे मात्र के लिए केवल प्रसंगोंपात प्रतीक रूप में ही जता कर
संतोष मान लें ऐसा नहीं।
यह तो एक प्रकार की मक्कारी है।
हमारे पल-पल के जीवन से ही
हमारी वह भावना अभिव्यक्त होनी चाहिए।
अंग्रेजी में कहा जाता है ना कि-
जस्टिस शुड नॉट ओन्ली बी डन,
बट इन शुड अेपियर टू बी डन!
तो, आज वक्त का तकाजा है कि-
प.पू. साहेब के कहे मुताबिक
आओ, पू.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी जैसी विभूतियों की निश्रा में
हम-पुराने जोगी सब मिल कर एक शिविर करके
इस प्रवचन को आंखों से नहीं-हृदय से पढ़ कर,
उनके शब्दों का हार्द, भावन, रहस्य व तात्पर्य को उनसे समझें
और
भूतकाल को भूल कर,सभी पूर्वग्रहों को छोड़ कर,
भविष्य को भविष्य में ही रहने देकर, **वर्तमानकाल में उसे अमल में लाकर**

साथीदार के रूप में सब एक जुट होकर
अधिक सहकार की भावना से काम करके
प.पू. काकाजी के प्रति की भक्ति अदा करें
और
यही हमारी उनके प्रति सच्ची भावांजलि है!
हमारा जीवन उनका दर्पण बने वही सच्चा तर्पण है!!
अंत में–भारत के प्रजासत्ताक दिन प.पू. काकाजी द्वारा अपने साक्षात्कार दिन निमित्त बरसाई यह अमृताशिष मूलतः तो गुजराती में थी।
परन्तु, उत्तर भारत के हिन्दी भाषी मुक्त भी
इस अनमोल लाभ से वंचित ना रह जाएं।
और.....
प.पू. काकाजी के इस संदेश से अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकें
उसी लक्ष्य से '**अक्षरज्योति**' की बहनों–
प.पू. दीदी व पू. बंसरी ने–जो कि स्वयं हिन्दी भाषी होते हुए भी
अत्यधिक लगन से इन गुजराती शब्दों के,
और उसमें भी–
चरोतर प्रदेश के काकाजी के शब्दों के हार्द को–भावार्थ को समझ कर,
इसका भाव ज्यों का त्यों रख कर हिन्दी में सुन्दर अनुवाद करके
हस्तलिपि तैयार करी
और
प.भ. आर.के. अग्रवालजी, प.भ.राकेशभाई शाह एवं सौ. सीतादेवी मदान द्वारा
प्रूफ चैकिंग की अद्‌भुत सेवा करके,
आत्मीयता व भक्ति अदा करने की भावना से
इस पुस्तिका को छपवाने में दिये सौजन्य को
उत्तर भारत के मुक्त कभी भूला नहीं पायेंगे।

दि. 13 मार्च, 2000
सोमवार

प्रकाशन समिति की ओर से—
साधु मुकुंदजीवनदास, भरत मेहता
और
हेमंत मर्चंट के जय स्वामिनारायण!

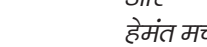

26 जनवरी 1986, रविवार
मंगल प्रवचन

प.पू. काकाजी : हरे !
प.पू. पप्पाजी : बढ़िया पाथेय बंधा दो।
फिलहाल घर-घर के सभी बैठे हैं।
सभा में जनरल बात करना, अभी घर की बात करो।
ठीक कह रहा हूँ ना साहेब ?
प.पू. काकाजी : वाह-वाह-वाह, हा-हा-हा.....भई-बड़े भाई हैं.....
'वाणी अमृतथी भरी मधुसमी संजीवनी लोकमां,
दृष्टिमां भरी दिव्यता नीरखता सुदिव्य भक्तो बधां,
हैये हेत भर्युं मीठुं जननीशुं ने हास्य मुखे वस्युं,
ते श्री ज्ञानजी योगीराज गुरुने नित्ये नमुं भावशुं,'
सहजानंदस्वामी महाराज की जय !
जैसे ग्राहक हों, ऐसी बात हो।
कोयले की भी दलाली हो, सब्जी की भी हो ?
सौ मन सब्जी बेचो, दलाली में कितने मिलेंगे ?
कोयला बेचो, उसमें कितने ?
यह हीरे का व्यापार है।
बापा की पहचान हुई,
शास्त्री महाराज की–मानवस्वरूप में हमें जो पहचान हुई,
वह भगवान की पहचान हुई।
हमने देखे, पहचाने, पार्श्यली अनुभव भी किया।
जानवर में से मानव हुए तब से यह करते आए हैं।
तीस हजार साल का इतिहास यह बताता है।
सभी अवतार आए।
लेकिन महाराज पधारे तब से एक रुचि, रहस्य, अभिप्राय और सिद्धांत;
फिर पप्पा ही हमें आज का एक रहस्य बतायेंगे।
हिन्दु–मुसलमान, आसमान–जमीन में जितना फर्क है,
इतना **रुचि** और **सुरुचि** में फर्क है।

संभव है, पप्पाजी जब बात करते हैं–'यह ब्रह्मनियंत्रित समाज है'–
बापा कहते–ओहो! अखंड अक्षरधाम में ही हो–
इस दर्शन से तुम्हारा पूरा हो गया, यह धब्बा लिया–अक्षरधाम!
लेकिन वह क्या? तो जिन्हें मर कर पाना था–जीतेजी मिले!
तुमसे यह माना नहीं गया।
माना, तो तत्त्व से पहचाना नहीं, वह तत्त्व यह।
पहचाना, तो अखंड धारा नहीं।
अखंड धारा, तो उसकी अवेरनेस में भी थोड़ा रहा कि–
मैं धारक हूँ, मैं अष्टांग योगी–गोपाळानंदस्वामी हूँ, मैं स्वरूपानंदस्वामी हूँ।
यह 'मैं' की जो अस्मिता रही!
उसकी बजाय बापा यूं कहते कि–तू मेरा प्रकाश–तू प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप।
'स्वरूप–स्वरूपी के ऐक्य वाला मैं तेरा प्रकाश!'
पप्पाजी यह सूत्र पहले से ही–ध्यान कराते तब से सिखाते हैं–करवाते हैं।
फिर भी संकल्प का–
एक बार–हमारे अश्विनभाई बैठे हैं,
उन्हें कई साल पहले–बहुत वर्ष पहले–
कितने वर्ष हो गए होंगे अश्विनभाई?
मैंने यह सूत्र कहा था–कब? याद है?
(पू. अश्विनभाई : सांकरदा–सांकरदा मंदिर में।)
प.पू. काकाजी : मैंने कहा था–
अश्विनभाई, हम जो अब लग पड़े हैं–
तुम्हें बापा ने कहा था–अश्विनभाई जाओ! ब्रह्मविद्या की कॉलेज चलानी है।
वहां चलती है–साहेब के पास, ब्रह्मविद्या की कॉलेज चलाते हैं।
मैं और पप्पा–दोनों उसके पी.एच.डी. की ट्रेनिंग देने वाले मास्टर–ब्रह्मविद्या के।
सो, वे बहुत खुश हो गए।
दो–तीन जगह से घूमते-फिरते, भटकते आए थे–वो और शांतिभाई!
तो, उन्हें कहा–ब्रह्मविद्या की कॉलेज चलाओ।
यह सारी ब्रह्मविद्या की कॉलेज है–साहेब।
भगवान मिलने के बाद की है यह–भगवान मिलने के बाद की है यह।
सावधानी के दरवाजे पर तो हम रहते ही थे।

लेकिन सबसे पहली चीज़ इस कॉलेज में–
आर.डी. पटेल साहेब व जो परीक्षा–लेते हैं ना ? पास होने की–
उसमें अब तो 80-80 प्रतिशत मार्क्स–उससे ऊपर भी ले आते हैं सब।
पता नहीं, चोरी करते हैं या पैसे खिलाते हैं, क्या होता है ?
हमारे समय में तो 62-65 प्रतिशत भी मुश्किल से–
चाहे जितना मरजी पढ़-पढ़ कर मर जाएं–तेल निकल जाए
तब भी नहीं आते थे।
अब कैसे लाते हैं, कुछ समझ में नहीं आता।
सब कुछ कोमर्शियलाईज हो गया है।
लेकिन, यहां कोमर्शियलाईज़ बिलकुल नहीं चल पायेगा।
सो, सबसे पहले–यह कॉलेज–ब्रह्मविद्या की–गुणातीत की यह कॉलेज है।
वह महाराज की कॉलेज बिलकुल अलग,
उसके नियम भी अलग, उसका साधु भी अलग।
सबसे पहले तो–उसका साधु कौन ? कि–
आत्मनिष्ठा, स्वरूपनिष्ठा, स्वधर्मनिष्ठा। 30-40-39 ये सब गुण जिसमें हों।
भगवान भी कहा जाये, वह छोटा-बड़ा।
लेकिन, उसमें भगवान का प्राकट्य पांच प्रकार से रहता है।
पहले तो–उस साधु और भगवान का अखंड संबंध होना चाहिए।
उसमें तीन गुण होने चाहिए–मिनिमम।
भले, एकादशी व्रत करने में शायद आलस भी कर जाता हो,
सोता भी रहता हो,
ऐसा–वैसा कुछ हो।
लेकिन, उसमें तीन गुण–महाराज के साधु में–
स्वधर्मनिष्ठा, आत्मनिष्ठा और स्वरूपनिष्ठा।
सत्संगी को–नियम, निश्चय और पक्ष।
अब चार प्रण रखते हैं; ब्राह्मण का–छूआछूत का बहुत नहीं रखते।
युगधर्म बदल गया है।
एकांतिक धर्म–दारू, मद्य, चोरी, व्यभिचार–जुआ।
फिर, हमारे यहाँ निष्काम और निर्मानी जो कहते हैं,
लेकिन उससे भी अधिक–मुक्तानंद और ब्रह्मानंदस्वामी

ऐसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी नहीं थे क्या ?
फिर भी अपूर्णता और कल्पना रह गई। महाराज में मनुष्यभाव रह गया।
अब, यहां से हमने शुरुआत करी–ब्रह्मविद्या की कॉलेज! बापा ने; ओहो!
गुणातीत ज्ञान की यह मैं बात कर रहा हूँ।
फिर दो मिनिट गुणातीत भावना की बात करूंगा।
और
फिर पप्पा आशीर्वाद देंगे। पप्पा के पास से आप सभी समझना!
रुचि–सुरुचि यह शब्द बहुत भारी हैं।
महाराज की रुचि, रहस्य, अभिप्राय और सिद्धांत–इससे परे की यह बात है।
यह गुणातीत ज्ञान यानि ? साक्षात् ज्ञान।
इसी पल ही–उनके दर्शन से तुम्हें अष्टांग योग सिद्ध हो गया।
बापा के दर्शन से ही अष्टांग योग सिद्ध हो गया।
पप्पाजी, काकाजी, साहेब, स्वामी–हम यह मानते थे।
बोलते नहीं थे, मानते थे। तो, सर्वस्व का अर्पण भी किया।
हमने बापा को पूछा–बापा! आप कब पधारोगे ज्योत में मुहूर्त्त के लिए ?
मुझे नहीं पूछना।
दूसरी बार, तीसरी बार।
बापा, आप जो कहो वही करना है।
धन, धाम, कुटुंब, परिवार, इच्छा, भाव, विचार सब कुछ,
सर्वस्व आपके चरणों में; अवर थोट्स ऑलसो।
हम दोनों भाईयों ने 'गाना' (गांव) में पूछा था;
'चांगा' हो या 'गाना' हो–गाना।
बापा ने कहा–मुझे नहीं पूछना। तुम दो एक होकर करो, जाओ–
(उसमें) मैं आ गया।
महंतस्वामी को बोले–महंत कहे वह करो।
वहाँ पूछने गए तब–कि अब हमें क्या करना है ?–वो और हरिप्रसादजी।
तो बोले महंत कहे वह करो, महंत कहे वह करो!
देखो, वहां से हमारी शुरुआत हुई। एक दूजे के अंतर्यामी!
ब्राह्म्यामी–परात्पर–साक्षीरूप भगवान–कर्मफलदाता और अब मूर्तिमान!
साक्षीभेदन हुआ।

तो पहला सूत्र–
सावधान तो थे ही, भगवान के साथ थे! लेकिन, माने नहीं गये।
माने, तो पहचाने नहीं।
नहीं तो इस पहचान से ही अखंड अक्षरधाम में हो।
पप्पाजी जो सिखाना चाहते थे, वह यह कि–ब्रह्मविद्या की कॉलेज है
यह–ब्रह्मविद्या की।
ऐसी एक विद्या कौन–सी है कि जो जानने से सारी विद्या जान पायें?
वह विद्या कौन–सी जिससे सभी-सभी प्रकार के–
पांचों स्वरूपों का साक्षात्कार हो जाए?
हमारा जो साक्षात्कार–पप्पा का और हमारा–**वह कुछ अलग है, वह अलग है।**
यह ज्ञान समाधि का साक्षात्कार है–ज्ञान समाधि का!
जहां ज्ञान समाप्त हो गया!
ज्ञान, वहां पूर्ण श्रद्धा–क्रियेटिव श्रद्धारूप से 'स्वरूप' बन गया।
'ज्ञान'–जानने का अंत आ गया।
उनके चरण कमल में हम सम्यक्–सम्यक् प्रकार से, मैं तेरा प्रकाश;
यहां से हमारे–गुणातीत ज्ञान की शुरुआत हुई।
वहां पहले क्या होगा? तो कि–तीन गुण से पर!
तुम सब साधु हो। इस हॉल में जो बैठे हैं वे भी साधु हैं।
बा भी स्त्री नहीं, पुरुष नहीं। वह भी एक गुणातीत संत है।
इस प्रकार जब तक तुम्हारा नजरिया बदला ना हो,
तब तक बा-बा लगेंगी, वो–वो लगेगा।
सो, तीन गुण से पर–पहले तुम एन्टर हुए–सत्त्व, रज, तम से?
यह निर्गुण सभा है–यह अक्षरधाम की सभा है।
यह गढ़डा शहर या कुछ नहीं, हे काठी लोग!
वे काठी लोग यानि हम ही थे उस समय–महाराज के समय!
लेकिन यह कसर–जूनागढ़ के जोगी की पहचाना नहीं, सो रह गई!
साधु को पहचाने बिना–साधु को पहचाने बिना–गुणातीत पुरुष को पहचाने बिना
महाराज तत्त्व से–जैसे हैं वैसे पहचान ही नहीं सकते। अशक्य वस्तु!
उनके साधर्म्य को–महाराज के (साधर्म्य को) पा नहीं सकते।
लेकिन गुणातीत के साधर्म्य को (पा सकते हैं)।

इसकी शुरुआत यहां से होती है।
साधर्म्य यानि–उनके समान गुण–ब्रह्म के समान गुण,
अति बड़े पुरुष को–बापा को देखने के बाद।
अश्विनभाई को मैंने कहा–भाई! अब यहाँ आए हो–
ब्रह्मविद्या की कॉलेज में दाखिल हुए हो
शांतिभाई! तुम जहां हो (जिस कक्षा पर हो) वहां से
साहेब द्वारा ही तुम्हारी पूर्णाहुति होने वाली है।
वे अस्सी (मुक्तों) के महारथी हैं। छात्रालय तो एक निमित्त था।
हमें अनुभव भी हुए।
मैंने कहा–संकल्प की बीमारी टालनी बाकी रही है।
सो–ये अश्विनभाई जरा विनोदी हैं।
और
मेरे साथ उन्हें पहले से दोस्ती।
तब वे गंजे थे।
मैंने कहा–अरे साधुराम!
तो बोले–आपको मेरा नाम कैसे पता?
मैंने कहा–वैसे भी भगवान ने मुझे थोड़ा तो अंतर्यामीपन दिया है।
मैं कहने गया–'संकल्प का'–
तो बोले–हाँ, आपको एक आदत है।
यह हमारा मकुंद कहता कि
काका कोई ना कोई नया शब्द–ना हो वहां से–लगा देंगे,
(प.पू. पप्पाजी हंसते हैं।)
मैंने पूछा–गेहूँ की कितनी आईटम होती हैं? बोले कि–पूरी, यह रोटी।
मैंने कहा–चौसठ आईटम होती हैं, चौंसठ आईटम–गेहूँ की–हं।
बोलो, पता है तुम्हें?
गेहूँ की चौसठ आईटम बनती हैं।
तो वह बोला–यह तुम बात जो करते हो,
वो नए–नए शब्द कॉईन कहां से (करते हो)?
मैंने कहा–यह मेरा बाप लिख गया है।
चौदह प्रकरण की बातों में नौ जगह पर 'संकल्प की बीमारी' लिखी हैं।

तो बोला–भई!
पर, तुम्हें समझना हो तो बात करें ना?
मैं कहूँ कि 'माजीकूला।'
तो वह मारने दौड़े कि माजी का कूल्हा याद करता है।
अरे भई! माजी यानि–पानी, कूला यानि–पीना है।
यह हम अफ्रीका की भाषा बोले–हैं?
'वेवे नामनागानी'-हें? 'अपाना, बानाडोबो–बानाकूबा–माजी कूला।'
यानि–माजी का कूला है क्या?
यह भाषा नहीं समझ पाओगे।
यूं बापा बोलते थे।
हम बहुत लंबा भाषण करते ना? माईक देखें और सभा ज़रा भरी हुई देखें ना?
सभा में यदि दो–चार जने ही हों, तो हमारा मुँह लटक जाता।
लेकिन वो माईक देखें और सभा में काफी जने हों,
तो चमक आ जाये–जोश आ जाये।
फिर बहुत समय हो जाए, टाईम हो गया हो;
बापा के लिए बोलने का तो टाईम ही न बचे!
अरे! मेरा और पप्पा का यहां (सभाओं में) बोलने में भी
तुम आखिर में रखते हो?
अरे–तुम अभी अंधे हो, कुछ दिखाई तो देता नहीं।
तुम्हारी बात नहीं करता हूं–आप लोग अपने पर नहीं लेना। (सभी हंसते हैं)
लेकिन, अरे! बोले कौन? जो देख पाता हो, वह बोले!
जो यूं जिये हों वह बोले।
ये गुणातीत शताब्दी या दूसरे उत्सव हम जब-जब मनाएं
तब मेहरबानी करके–मेहरबानी करके, बेकार में ऐसी ढोंगबाजी हम ना करें।
तुम क्या कह पाओगे?
तुम्हें तुम्हारे स्वरूप का भी अभी साक्षात्कार दर्शन नहीं है–
तो क्या बात कर पाओगे?
पप्पाजी हों, स्वामिजी हों, अक्षरविहारी हों, साहेब हों–
वे कुछ बोलें उसमें से समझने को–तुम्हें तुम्हारे भीतर का कोई भी प्रुड–
कोई कसर हो वह पता चल जानी चाहिए।

यहाँ अखंड अक्षरधाम है, अक्षरधाम है यह।
यहाँ प्रकृति–पुरुष का कोई भाव नहीं।
तो, इस ब्रह्मविद्या की कॉलेज में–धन्यवाद!
हीरे की ख़ान (में)–तुम आए!
वह संकल्प की बीमारी टली? **इस वक्त भी यही बात है।**
सबसे पहले, इच्छारहित–सभी! संकल्परहित–सभी!
अहं-अहं–संकल्प का एक स्वरूप है
और
इच्छाशक्ति–वो स्त्री एक शक्ति है।
शक्ति और संकल्प–प्रकृति और पुरुष से पर का ज्ञान है।
ज्ञान यानि? मूर्तिमान गुणातीत स्वरूप!
ज्ञान यानि जानना नहीं।
चार वेद नहीं, पांचवां वेद–'ब्रह्मज्ञ' से तो शुरू होता है
और
ऐसे गुणातीत पुरुष के संबंध में तुम्हें रखा।
तो मैंने कहा-अश्विनभाई! संकल्प की बीमारी टालनी पड़ेगी।
तो, पहले संकल्प का अनादर करो और आदर इसका करो।
आदर-अनादर, आदर-अनादर।
यह यहां से शुरुआत हुई।
फलस्वरूप-पहली साल पास होने पर आर.डी.पटेल साहेब आपको कहें कि-
पचास प्रतिशत मार्क लाओगे, वह नहीं चलेगा;
यहां पिच्चहत्तर प्रतिशत मार्क चाहिए।
यानि क्या भई? कि-भले कैसे ही प्रसंग में
तुम पर सत्त्व-रज-तम गुण हावी नहीं होने चाहिए।
तीन गुण से परे-तीन गुण से परे।
हम करमसद के बड़े कुलवान कहे जायें।
चार नाई के बीच तो चलें, ऐसी हमारे बाप-दादा की विरासत
उसमें से हमें कोई 'कणबी'-थोड़ा नीचा कह कर तो देखे!

यह ज्ञान कहना बड़ा आसान है,
लेकिन हमारे खून की बूंद-बूंद में ऊंचे कुल की कोन्सियसनेस पड़ी है।
बचपन से यह सीखे हैं।
मेरे दादा थे, तब पप्पा तो पहले से सयाने और मैं-शरारती।
चौदह वर्ष की उम्र से वे हिसाब लिखते।
मुझे मेरे दादा कहते कि हिसाब लिखो।
मैं कहता-दादा, अभी से हिसाब नहीं लिखा जाता, सोलह वर्ष के बाद-
मनु भगवान ने ऐसा कहा है।
बाबु, यह मुझे उपदेश करता है-देख!
क्योंकि पप्पाजी पहले से बहुत (कम) बोलना-
घी की भाँति वाणी का उपयोग करें–
पता नहीं (क्यों?) और वैसे भी शांत।
वे लिखते, हिसाब लिखते।
हिसाब लिखना पड़े–(वह मेरे बस का नहीं); पर दादा के पास अपनी चले नहीं।
सो, तीन (3) की जगह सात (7) लिख दूं–एकदम!
तब वे बोलते–
अरे बाबु! इसने तो घोटाला कर दिया। तू फिर से सारा जोड़ लगा।
वर्ना, उल्टा पड़ जाएगा।
ये खूब सयाने। फिर से सब ठीक-ठाक कर लेते।
लेकिन कभी भी मुझे डांटा नहीं।
मैं, खूब उछल-कूद करने वाला, शरारती।
ओहो! खतम। मेरा नाम नहीं ले सकते थे।
मुझे घंटाकरण–गुरु घंटाल कहते। (सभी हंसते हैं।)
ये साहेब को कहा–बामण गांव गए थे,
अरे ये गुरु घंटाल–तू यहां कहां से चढ़ बैठा?
बामण गांव में–मेरे साथ मैट्रिक में था वो।
तो मैं उसे कहता कि उसका दीया बुझा दे।
मेरे दादा पैसे देते नहीं थे।

रीसेस में हमें चने और मुरमुरे खाने के लिए चाहिए थे।
सो, स्कूल से छूटने पर–हमारी पांच जनों की एक गैंग थी,
उसका मैं गैंग लीडर।
उसे मैं कहता कि तुझे दीया बुझा देना है।
यूं वो दीया लेकर बैठा होता है न?
शाम का समय हो, पांच-छः बजे (स्कूल से) छूटते थे,
सर्दियों के (छोटे) दिन होते थे।
संतराम मंदिर में वह दीया बुझाने फूंक मारे।
फिर एक जना उसके हाथ पकड़ कर रखे
और
मैं जेब-वेब भर कर, चने-वने, मूंगफली भर कर भाग जाता।
फिर उन साथियों को भी दूं नहीं, उन तीन जनों को।
वे कुछ बोल भी नहीं सकते। रींग लीडर ऐसा जबरदस्त–भूपत जैसा।
यह सब शरारतें–यह सब कुछ; पर इसमें हमने भगवान ढूंढ लिए–हकीकत में!
छोटे थे तब से कहते थे, हम दो (दोनों के लिए)–
बापा–शास्त्रीजी महाराज पहले से कहते–
डॉक्टर, ये तुम्हारे दोनों लड़के अनादि महामुक्त हैं।
और हम वर्ते भी ऐसे।
ये (प.पू. पप्पाजी) सांख्य के महाराजा–जबरदस्त! और योग का मैं महाराजा!
हम दोनों इकट्ठे हुए, वहाँ अक्षरधाम खड़ा हो गया।
योगीजी महाराज को मैंने कहा, पप्पाजी आओ–
यह अकेले हाथ हो ऐसा नहीं है।
नो सिंगल मेन केन डू.
गुणातीत के रहस्य की यह बात है।
किसी एक व्यक्ति को कोई (भी) व्यक्ति को सर्वोपरि नहीं ठहराना, बिल्कुल।
कोई एक व्यक्ति को सर्वोपरि नहीं ठहराना।
(मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी) स्वामी कहते–मैं हूँ जबरदस्त, लेकिन....
कहते–मेरी अकेले की महिमा नहीं गाना, बिलकुल नहीं गाना।

वर्ना, अपकीर्ति कराओगे।
पांचवें प्रकरण की यह बात है–दो बार कही है।
मुक्तानंद, ब्रह्मानंद, गोपाळानंदस्वामी को साथ में लेकर हमारी महिमा कहना, वर्ना तो अपकीर्ति करवाओगे।
मेरी अकेले की महिमा गाओगे तो मेरे लिए दुःख खड़ा करोगे।
और वे छुपे रहे।
तो, दो–तीन मिनिट में ही बस–पूरा करता हूँ।
(सभा में से कोई बोलता है–फिर नौ बजे सभा है।)
हं.....
(दोबारा वो बोलता है–नौ बजे सभा है ना?)
यह रहस्य था–साधु होने का; गृहस्थी-त्यागी का बिलकुल मेल नहीं।
तो अश्विनभाई को कहा, हम संकल्प की बीमारी टालें।
मेरा यही कहना है—इस वक्त भी।
सबसे पहले कि ब्रह्मविद्या की कॉलेज में दाखिल हुए।
हमारा चुनी चतुर्वेदी था। सात साल लगे मैट्रिक पास होने में।
कितनी धीरज होगी उसकी?
शास्त्रीजी महाराज ने कहा था, यह ज्ञान प्रकृति-पुरुष से परे (का) है।
गुणातीत पुरुष के बिना गुणातीत करेगा नहीं।
सिद्धदशा होगी, करोड़ों को सत्संग कराओगे, लेकिन खुद नर्क में जाए।
रिद्धि-सिद्धि, ऐश्वर्य–प्रताप, मान की थोड़ी-सी छींट भी;
तीन गुण से परे–निर्गुण–संबंध से हो गए।
यह धब्बे में धाम दे दिया बापा ने;
पर, पहचाना नहीं।
तब हमने बापा को–देवशी बापा को कहा, गोंडल यदि ना जा पाएं
(क्योंकि विरोध के कारण जाने नहीं दें।),
ये बापा जहां चाहे वहां 'देरी' करेंगे।
राईट?
(पू. देवशी बापा प्रत्युत्तर देते हैं–राईट)

राईट!
माणावदर भी 'देरी' बापा ने करी।
11 प्रदशिणा करी (और कहा–) जाओ यहां 'देरी'!
आज पप्पा ने इतने सालों के बाद कहा–
तुम्हारा देह मंदिर बनाओ, तुम्हारे घर मंदिर बनाओ।
तुम जहां रहो वहां मंदिर, तुम्हारी फेक्टरी मंदिर।
तो, और सब बातें छोड़ो। अब ब्रह्मविद्या की कॉलेज में तो आ गए।
पाँच-सात वर्ष बाद, दस वर्ष बाद, तो कोई पच्चीस वर्ष के बाद–
सद्गुरु बाहर निकले।
वे जो बड़े-बड़े थे ना?
कोई गायों में बंध गए, सोनाब की रोटी में बंध गए–सोनाबा नहीं, गंगाबा की।
लेकिन सोनाबा के प्रेम में बंध गए।
'नो'।
मैं, ठाकुर और क्रिया–बस! बीच में तीसरा भी कोई होना नहीं चाहिए।
फिलहाल बहुतों की अधिकतर कनिष्ठ मुक्त की स्थिति है।
पप्पाजी बोले कि जैसा हो वैसा परोसना। तो, बुरा नहीं मानना।
भगवान भी हैं, संत भी है; लेकिन तुम भी हो।
तुम ब्रह्म का प्रकाश हो यह माना जाता है क्या?
करोड़ों ध्यान से भी यह बात अधिक है।
भजन से अधिक बढ़ कर स्मृति, स्मृति से अधिक ध्यान है।
ध्यान से अधिक अनुवृत्ति है, अनुवृत्ति से अधिक अभिप्राय है।
अभिप्राय से अधिक बात यह कि ये (जो) मिले है।
(अक्षर) धाम में हैं वे ही ये हैं और मेरी आत्मा में अखंड विराजमान हैं।
जहाँ देखुं वहां रामजी–दूसरा कोई ना दिखाई पड़े।
'वसुधैव कुटुंबकम्'–ये बोलने की बात नहीं थी।
सोऽहम् (के बाद)–दासोऽहम् से शुरु होता है यह।
गुणातीत में देखो–सभी 'दास' शब्द हैं।
महाराज में–सब आनंद करो भई आनंद करो।

प्राप्ति हो गई–भगवान और संत की।
गढ़डा में काठिओं को समझाते हैं।
यहां दास ही होंगे सभी। यहां (सभी) दास ही होंगे।
तो, दास के बाद की एक स्टेज हैं–यह ब्रह्मविद्या की!
(सत्त्व-रज और तम) गुण में फंसे नहीं।
दासानुदास–दासानुदास।
वहां से अश्विनभाई ने शुरु किया (और) शांतिभाई (ने)।
आज डॉक्टर सनंद–(पहले) इतना अधिक क्रोधी।
उसे तुम सहज भी एक शब्द कहो, तो घास के दो पूड़े लेकर–
उसका वह गांव,
कौन–सा है? झारोला को जला दे।
उसे कोई कायदा–वायदा बीच में नहीं आता।
तुम्हारे करोड़ों ध्यान से अधिक मेरी यह बात–कौन सी?
प्रत्यक्षभाव की!
प्रगट तो थे ही।
न तो निष्कुळानंदस्वामी समझे, सात माईल तक आ-आकर।
अब दो सौ के बाद तो वह पूर्णाहुति करो।
हमारा साक्षात्कार–पप्पा का, हमारा, स्वामी का, साहेब का–
(वह) कोई अलग है।
पूर्व के, अस्सी जनों के तो महारथी थे साहेब। तो फिर क्यों आए लेकिन?
भगवान, संत तथा भगवदी को जैसे हैं वैसे तत्त्व से पहचानने।
पहचाने तो हैं, बैठे भी हो, लेकिन तुम भी हो ना अब भी? तुम भी हो ना?
तो, पप्पा और मैं कई बार बोलते–हमारी बहन को। हं!
यह सब हुआ–मेरी बहन (हमें) बहुत प्यार थी इसलिए।
यह अकेले हाथ नहीं बना है।
कोई एक व्यक्ति ने किया ऐसा भी नहीं है। करा बापा ने।
योगीजी महाराज अभी इस सभा में—शास्त्रीजी महाराज, महाराज हाज़िर हैं।

तुम्हारे हृदय में भी हैं।
और
उन्हें ही याद करके–चरणों में शीश झुका कर दीनता से याचना करें।
हे बापा! आपके स्वरूप की–
तुम्हारे स्वरूप मुक्तों के स्वरूप की–जैसी है वैसी पहचान करवाना।
और
उसमें भी हम जाग्रतरहें ऐसी अॅवेरनेस–अॅवेरनेस–
ऐसी गुणातीत अस्मिता प्रगटाना।
गुणातीत अस्मिता।
ये शांतिभाई, डॉ. सनंद, मैं कहता हूँ, वी.एस. भी,
अश्विनभाई, हरिभाई साहेब भी ऐसे महारथी हैं–
उन्होंने यह अस्मिता प्रगटाई।
यह सारी बहुत लम्बी बात है–अब भी।
थोड़े दिन बाद दोबारा कभी फुर्सत से आऊँगा तब करूंगा।
आज तो पप्पा ने लाभ दिया।
और
यह बात समझोगे तो ही छुटकारा है।
जैसे महाराज ने कहा कि यहां लल्लु-पंजू का राज नहीं।
पर्वतभाई जैसे–अनंत पर्वतभाई! लेकिन संकल्प की बीमारी!
अखंड चिंतन करने वाले–पर्वतभाई, अनंत!
वो साधु को पहचाना? साधु को पहचाना?
तुमने पप्पाजी को पहचाना?
सारा मॉब कहता है हमनेः हरी-हरी!
वो हरिप्रसादजी को पहचाना?
तो तुम रहोगे नहीं। मैं प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप।
तू मालिक है। तू मुझे अखंड सावधान रखना।
जिससे कि–मेरी कोई क्रिया में हठ, मान, ईर्ष्या ना आए।
बुद्धि के चार दोष बाधारूप ना हों–संकल्प, विकल्प, विपरीतभाव, भेदभाव

और कहते हैं–
विरोधभाव भी–पांचवां।
तुम्हें कोई भी शब्द न चुभे–भाव में बह न जाओ, गुण प्रभावित न करे,
स्वधर्म चूके नहीं, मूर्ति भूलें नहीं।
लो, इस कक्षा पर तुम्हें ले जाना है।
करोड़ों-करोड़ों ध्यान से अधिक–एक ही यह बात;
आध्यात्मिक समता से शुरु होती है
और
मूर्ति में अखंड रहो। तादात्म्य-तादात्म्य!
तो जहां देखो वहां–
कोई भी प्रसंग–परिस्थिति में
हम (सत्त्व, रज और तम) गुण से प्रभावित ही ना हों।
वो साधु। वो साधु। ये भगवा–त्यागी हुए।
भले वहां सात सौ साधु, हमारे पास चार सौ;
लेकिन सच में साधु–ये भगवा कपड़े वाला, हमारा अश्विन साधु है।
आज सभी साधुओं में देखना हो तो है-अश्विन!
तो फिर साहेब की तो बात ही क्या करनी?
तुम (सत्त्व, रज और तम) गुण में फंस जाते हो क्या?
हमें–छः गांव के पटेल को–कुलीन को 'कणबी' कह दे,
(तो) क्षोभ भी होता है क्या? तो हमारा नंबर भी गया।
प्रकृति-पुरुष से परे का ज्ञान है।
सतत् अनुसंधान रखा तुमने। तो आज तुम भी ब्रह्मस्वरूप।
पप्पाजी तो दूसरी कक्षा वाले और तीसरी कक्षा वाले तक को कहते हैं।
लेकिन, **मैं मेरी परीक्षा में पास करूं ऐसे बहुत थोड़े निकलेंगे।**
इसलिए मैं तुम्हें बहुत जँचूंगा नहीं–एकदम।
और
तुम्हें तालियाँ बजा-बजा कर–
वंदु सहजानंद रसरुप अनुपम सारने रे लो.....

बहुत खाया–पाया, दूधपाक पीया–धब्बा खाया।
यह महाराज का ज्ञान नहीं चलेगा।
साधु के ज्ञान में–तुम जहां हो, वहां से ही तुम्हारे संकल्प को तोड़ डालना।
दूसरा संकल्प फिर–किसी भी प्रकार की इच्छा–इच्छा रहनी ही नहीं चाहिए
और
इच्छा के बाद अपेक्षा नहीं–निरपेक्षभाव!
बा का प्रेम ऐसा निरपेक्ष है।
बात बहुत लम्बी है।
भगवान और संत–उनकी कृपा प्राप्त करो। उनके संबंध में हो।
ऐसी आत्मबुद्धि और प्रीति से शुरु करो।
निर्दोषबुद्धि सम्यक् होनी चाहिए। अभी शरती निर्दोषबुद्धि है।
उसमें से आज–
मेरा साक्षात्कार दिन जब मना रहे हो, तब बापा को इतनी ही प्रार्थनाः
महाराज! इन लोगों ने परिश्रम बहुत-बहुत किया है।
केवल आपके अनुग्रह से ही आप इन्हें सम्यक् निर्दोषबुद्धि-
जहाँ देखो वहां रामजी, दूसरा नहीं। कुछ दिखाई ही नहीं पड़े।
आप में से आए वही इच्छा, क्रिया, संकल्प करना है। बाकी, जय स्वामिनारायण!
महाराज हमें कहीं फंसने नहीं देना।
हे दयालु! हमें जबरदस्ती भी ऐसा वर्ताना। यही गुरु चरणों में प्रार्थना।
दो जनों के साथ ऐसे रसरूप होना, भिन्न-भिन्न अंग वालों के साथ।
तभी यह शक्य होगा।
हमें बहुत गौरव हैं।
बहनों ने और तुमने खूब शोभा बढ़ाई है।
ऐसा खूब बल–
उड़ते कर दें–रॉकेट जैसे, यही गुरु चरणों में प्रार्थना!

साक्षात्कार दिन के उत्सव की सभा में— सुबह : 10.00 बजे

मेरे ही साक्षात्कार दिन के निमित्त मुझे ज्यादा नहीं बोलना चाहिए।
तुम्हें ही बोलना चाहिए।
लेकिन फिर भी, (प.पू. पप्पाजी हंसते हैं)
दूसरे किसी दिन ऐसा रखो तो अच्छा;
वर्ना तो आज मैं बोलूंगा, तो भी–
मेरी बातें कईयों को अभिमानरूप लगेंगी।
(प.पू. पप्पाजी : आपके साक्षात्कार का हम बोलेंगे।
आप हमारी कसर दूर करने के लिए,
जो–
सूझ देने की बात है, वह पहले करो।
सुबह आपने कहा कि सभी कनिष्ठ मुक्त हैं।
अब कनिष्ठ में से उत्तम किस प्रकार हो पाएं वह रीति बता दो।
प.पू. काकाजी धीमी आवाज़ में हंसते हैं।
बस! और फिर आप आशीर्वाद देना; निपट गया हमारा।
साक्षात्कार तो हुआ ही है, भगवान ने कराया है।
अब उसमें क्या बार-बार कहा करना है?
हुआ–(सो) हो गया। अब करा डालो हमारा साक्षात्कार।
तब जाकर निपटे हमारा काम–पूरा! बस हरे.....)
(गले में खंखारते हुए प.पू. काकाजी प्रारंभ करते हैं)
वाणी अमृतथी भरी मधुसमी संजीवनी लोकमां.....
(यहाँ रुक कर बोलते हैं)
इससे पहले–
श्रीमद् सद्गुण शालिनं चिदचिदि व्याप्तं च दिव्याकृतिं, जीवे साक्षर–
(प.पू. पप्पाजी और सभी हंसते हैं।
तो प.पू. काकाजी पूछते हैं–)
क्यों हंसे? क्यों हंसे लेकिन?

(और फिर ख़ुद भी हंसते हुए कहते हैं–)

मैं ही क्यों गल्ती करूं?

गुरुदेव को, सद्गुरुदेव को–हमारे प्रभु थे बापा उन्हें याद करने से पहले–

प्रभु के भी प्रभु एक सहजानंदस्वामी!

शास्त्रीजी महाराज ने–योगीजी महाराज ने कभी भी, सपने में भी–

स्वामी और पप्पाजी साक्षी हैं कि हम महाराज के बैल हैं–

यूं बहुत बार वे बोले थे।

जागास्वामी–भगतजी महाराज की एक रिकॉर्ड–

कांतिकाका ने एक वह रीबिन वाला टेपरिकॉर्डर लिया था–

चक्कर घूमता हो ऐसा, उसमें थोड़ी बातें अभी भी हैं।

लेकिन कई–कितने शब्द तो सुनाई नहीं पड़ते।

शास्त्री महाराज की एक रिकॉर्ड है।

उस समय एक प्रश्न ये महानुभाव ने पूछ डाला था, मैंने ही पूछा था।

अपने प्रति इतना अधिक रोष, ओहो! कि–

जहां-जहां भी नाम था 'देरी' के ऊपर भी नाम थे, सब मिटा दिया।

यह एक रहस्य है।

वचनामृत में गुणातीत का नाम कहीं नहीं मिलेगा, लो देखो।

भागवत में राधा का नाम कहीं नहीं मिलेगा, देखो।

अभी भी सारे, अक्षरपुरुषोत्तम के इतने सारे विकासक्रम में भी

हरिप्रसाद, पप्पाजी, काकाजी, अक्षरविहारी, साहेब का नामोनिशान भी नहीं होगा।

वाह-वाह!

यह परम रहस्य है। वह तुम्हें ढूंढ लेना पड़े।

सिद्ध होंगे, सर्वज्ञ होंगे, आकाश में उड़ते होंगे,

पानी पर चलते होंगे, जमीन में डटे रहते होंगे,

करोड़ों लोगों को सत्संग कराते होंगे–

दसवें प्रकरण की दो सौ तैंतीसवीं या इक्कीसवीं बात;

लेकिन हम मनमानी करते होंगे

या

हमारे मन का आभास भी रहा होगा–

वह गोपाळानंदस्वामी का ज्ञान है।
और
वहां तुम किसी के अभाव–अवगुण में पडोगे ही,
क्षोभ रहेगा ही, पक्षापक्षी (खींचातानी) रहेगी ही।
उसमें कल **हरिप्रसादस्वामीजी ने**
पप्पाजी ने जो ये शुरुआत करी (थी)–व्रतधारी युवक और अंबरीष दीक्षा (की)
कौन जाने कब ? हमें तो पता ही नहीं,
फटाक बिठा दिया बावन जनों को।
उसमें मैंने जब फकीरभाई का नाम देखा
और
हमारा वह 'मोटा' का भाई–क्या उसका नाम ?
'छोटा'–(ये) सब विभूति पुरुष देखे।
भगतजी हो, वो तो समझ सकते हैं,
दक्षा (के) हमारे सतुभाई हों, वह समझ सकते हैं।
लेकिन यह एकदम फकीरभाई को!
अभी तो उसे दादा की हैसियत से कितने पालने झूलाने होंगे।
कई कितनी उमंगे होंगी (उसे)।
उसकी तो अभी हमें दावत भी नहीं दी।
सारे समाज को दावत देना चाहिए।
सांकरदा, यहां–हर जगह; समाज के लिए एक दिन ऐसा रखना चाहिए।
भगवान ने उसे दिया भी है।
और
हम आनंद करते।
उसकी बजाय उसे बिठा दिया!
'अंबरीष दीक्षा' यानि–अब एक 'बेज' मिल गया,
यूं यह स्वामी ने गले में डंडा लटका दिया–बावन जनों के।
इससे अधिक,एक भव्य काम किया,
जैसे पप्पाजी (ने) साथ (में) रह कर–बहनों का।
हमने यही मुहूर्त किया था–बापा की हाज़िरी में।

बापा बोले थे, यह सनत बैठा है–वो, सनत
और
एक सुधा बहन का लड़का था–
(पू. साहेब बोलते हैं–'गगन'। सो, प.पू. काकाजी पूछते हैं–हें?
दोबारा पू. साहेब कहते हैं–'गगन'। सो, प.पू. काकाजी वह रीपीट
करते हैं–'गगन')
जो केन्डल कट करता था, हजामत–केन्डल कट-केन्डल कट।
वह यही रसोई, यही वाली रसोई। (फिलहाल विद्यानगर में बनी रसोई)
बापा को मैं (वहां) ले गया था।
बापा कितने चालाक? देखो, रहस्य की बात आज करता हूँ।
मैंने कहा बापा, अब वे सब देखने के लिए आने वाले हैं ना?
तो बोले–तुम ऐसा कहना कि (अभी) लिन्टल तक आया है–लिन्टल (तक)!
मैं भी नहीं समझता था,
मेरा बाप भी शायद समझता होगा या नहीं कि लिन्टल यानि क्या?
(फिर हंसते-हंसते बोलते हैं–)
बापा ने यह ढूंढ निकाला कि–
(अभी) लिन्टल तक आया है यूं कहना।
मैंने कहा, लेकिन बापा–वे कहते हैं कि हमें आना ही है।
तो बोले–अभी लिन्टल तक आया है,स्लेब भरने दो–स्लेब भरने दो,
बाद में आओ;
खुला है, तो धूप लगेगी–ऐसा कहना।
इतनी रक्षा--इतनी रक्षा।
मैं एक दूसरा ड्रामा करने वाला था।
पप्पाजी ने भी एप्रुवल दी कि दादु की दोबारा शादी कराओ।
लंडन की एक लड़की भी देख रखी थी।
नाम भी कुछ था–मंजुला या ऐसा।
वहां के किसी होटल वाले की लड़की, उन्होंने ही सिलेक्ट करी थी–
कि ऐसा मेरा भाई!
भगवान की इच्छा।

मैंने बापा को पूछा, बापा को पूछे बिना तो कुछ करना ही नहीं था।
लंडन में उस समय दस लाख रुपिए तो कमीशन (मिलता था)।
थर्टीवन-इकत्तीस की उम्र।
हमारे यहां तो 60 साल के बाद भी शादी करते हैं।
मैंने बापा को पूछा–बापा इसका कैसे करना है?
वे और नंदाजी पूछने गये थे कि–यह सब मैं क्या देख रहा हूँ?
मेरे भाई को इन सब ने पागल कर दिया।
छत पर जाकर पप्पा रोते।
डेढ़ सौ–डेढ़ सौ पाउंड मुझे पढ़ाई के लिए भेजते–
कि भई तू पढ़, होशियार (है) पहले से ही।
वे ख़ुद बहुत शांत,
सीधा घर से जाना स्कूल, स्कूल से सीधे निकल कर घर आना। ओलिया भाई!
और
मैं स्कूल से निकलूं, तब तक मैं तो पच्चीस लड़कों को पीट कर निकलता (था)।
स्कूल में जाएं तो वहां भी सोटी पड़ती।
तब मैं पहलवान था। अभी भी मैं चार जनों को तो ठोक दूं।
स्वामी (बापा) के साथ (घूमते थे) तब एक बार लड़ाई भी हुई थी–
योगीजी महाराज के साथ (घूमते थे तब)–शूरवीर योद्धा!
तो, मुझे मेरे नड़ियाद वाले दादा कहते कि–'हिसाब लिखो'।
दादा! नौ वर्ष की उम्र में हिसाब नहीं लिखा जाता।
बाबु! तू लिखता है और यह ना करता है।
पप्पा ख़ूब सीधे, जो कहो वो यस-यस।
और उनकी तबियत भी ऐसी कि–
मेरी 'डोशी' माँ मुझे पालने से बाहर निकाल दे, मैं छोटा था तो भी–
और
उन्हें अंदर सुला दे। मैं देखता रहता कि यह क्या देख रहा हूँ?
अरे! पर मुझे सोने.....मुझे (और हँसते हैं व हंसते-हंसते बोलते हैं)
हकीकत कहता हूँ आज–
आज अब टाईम दिया ही है, तो आनंद करें–और क्या?

और
पप्पाजी तुम्हें दूधपाक और माल पूड़ा, काली–क्या? रोटी–सफेद दाल या क्या?
(सो, प.पू. पप्पाजी कहते हैं–काली रोटी, सफेद दाल।
वह प.पू. काकाजी रीपीट करते हैं।)
काली रोटी, सफेद दाल खिलाते हैं–बड़े भाई। सो जल्दबाजी है नहीं।
हाँ–तो, फिर, मुझे मेरी डोशी पालने से निकाल देती और उन्हें वहां सुला देती।
मैं देखा करता कि क्या चल रहा है यह?
विराट दर्शन हुआ यह–या ब्रह्मदर्शन?
हमने सोचा–चलो भई, जाने दो–बड़े भईया को आराम करने दो,
कोई बात नहीं। (प.पू. पप्पाजी हंसते हैं।)
और
मैं पत्थर जैसा।
कुछ टकराये करे–ईष्टं पिष्टं
हम दोनों का यह रवैया-अभी भी ज़ारी रहा है। धन्यवाद!
सात साल की उम्र में पप्पाजी को कहा,
अक्षरधाम लाओ, असाधारण काम करें हम।
और
अब हरिप्रसादजी और अक्षरविहारीजी व साहेब जुड़ गए।
सच में, इन संतों के बारे कुछ मन दुःख हो तो इतनी बात–
आज बहुत ही अच्छी तरह साक्षात्कार.....
दीक्षा दिन के बाद का पहला दिन है यह–गुणातीत के दीक्षा दिन के बाद का–
ज़रा भी उदास नहीं होना। असंभव वस्तु–
बहनों का–असंभव में असंभव–
श्री अरविंद करना चाहते थे,
फकीरभाई को पता है।
इस काम में तो हमारी विजय हो चुकी।
यहां की बहनें,
दक्षा की बहनें तो, दो-चार बहनें ऐसी हैं, अभी भी–ओरिजीनल,
उनको तो स्वामिजी का सीधा कोई जोग रह नहीं सकता।

अंतर्यामी मान कर ही वर्तना पड़े।
ऐसी प्रवीणा के साथ एक दूसरी है–
वह जूनागढ़ वाली या वंथली (की)–लेकिन वो पूर्व के हैं–
इतना ख्याल रखना।
हमारा आज विश्वास करना।
हरिप्रसादस्वामिजी, पप्पाजी, काकाजी, अक्षरविहारीजी, साहेब—
इस केबिनेट की बात हो रही है–फाईनल।
तो, पहली बात यह कि जैसे हम दो भाई
पहले से ही–अक्षरधाम–स्वर्ग तो लाए,
लेकिन–
अक्षरधाम–यानि अंतःकरण की शांति और शुभ संकल्प।
कल (का) उत्सव पूर हुआ।
मैंने सुबह ही स्वामी को कहा–
स्वामी ने भी कहा था कि हमारा सब कुछ निर्विघ्न पार उतर जाए।
मैंने कहा कि शायद कहीं आग लगे या कोई मथ्थापची खड़ी होगी;
एडवान्स एक सप्ताह पहले आया तब–
मैंने प्रेमस्वामी को कहा था–तू वॉचमैन ठीक रखना।
यहाँ ये गुंडे भी आएंगे व और सभी आएंगे,
लेकिन महाराज निर्विघ्न पार उतारेंगे।
धन्यवाद, योगीजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज को कि–
कितना भव्य उत्सव? कोई सिर्फ देखे तो वहाँ उसके विचार बंद हो जाएं!
खाली ऐसे यूं ही–ऐसे ही घूम कर यूं जाए।
चीफ मिनिस्टर बोले–मुझे पूछे–वहां के और यहाँ में फर्क क्या?
मैंने कहा कि मैं एक सेकेन्ड में जवाब दूं तो सच मानना, विचार भी नहीं करूंगा।
साक्षात्कार वाला पुरुष हूँ। देखो कितनी अधिक अभिमान की बात—नहीं?
कितनी अधिक (सभी हंसते हैं।)
कृष्ण ने भी कहा–
'सर्वधर्मान् परित्यज्य-मामेकं' मेरे अकेले की (ही) शरण में आओ।
'अहं-अहं' जो छोड़ना, वह वे बोले।

अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामी मा शुचः।
मैं यह 'अहं' नहीं बोलता, लेकिन मेरे बाप का लड़का हूँ—
जिनका ही चलता है, जो सर्व सत्ताधीश हैं, सार्वभौम सत्ता–सहजानंदस्वामी की।
ये शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज के रूप में–राईट?
(प.पू. स्वामिजी बोलते हैं–राईट।)
राईट बोलते हैं।
(सभी ताली बजाते हैं औरप.पू. काकाजी हंस कर कहते हैं।)
और **मेरे वो बाप अभी इस सभा में हाज़िर हैं, गये ही नहीं, गये ही नहीं।**
(सभी जोर से ताली बजाते हैं।)
हम उनके प्यारे लड़के हैं
ये ऊपर जो बैठे हैं वे सभी।
हम सब धूमकेतू हैं।
धूमकेतु–यानि एक तारा नहीं,पूंछ वाला तारा–पुछल तारा।
सो, तुम कैसे कह पाओगे कि–एक ही–हरिप्रसादजी ही?
कोई कहेगा–पप्पाजी ही।
और कोई कहेगा स्वामिजी ही,
कोई बोलेगा–अक्षरविहारीजी ही।
यह एक देशस्थ ज्ञान को सर्वदेशीयता में ले जाओ।
सर्वदेशीय—सर्वदेशीय।
वहां तुम्हारी दृष्टि पलटेगी।
पहले के सुंदरतम तत्त्वों–
और
नई—इक्कीसवीं सदी के रॉकेट टाईप के तत्त्व–
इन दोनों का हम समन्वय कर रहे हैं।
उसमें यह अंबरीष दीक्षा।
सो, कई बातें तुम्हें नहीं समझ आएगी।
क्रांतिकारी युगधर्म
और
सनातन धर्म तो वैसा ही रहने वाला है।

ब्रह्म के निरुपण में फर्क पड़ेगा, तत्त्व में बिलकुल फर्क नहीं पड़ेगा।
अक्षर और पुरुषोत्तम की वह युगल उपासना अखंडित रहने वाली हैं।
कोई महाराज हुआ नहीं, होगा (भी) नहीं। सहजानंदस्वामी ही हैं।
(इस बारे) हम सभी एकमत हैं।
और (तुम्हें 'महाराज') होना हो, तो हमें ज़रा भी हर्ज़ा नहीं–
मैं बापू को कहता हूँ कि तूझे होना हो तो, तू भी 'स्वरूप' हो जा।
(सभी हंसते हैं–और प.पू. पप्पाजी कहते हैं–वह तो है ही, लेकिन)
लो ? अब इन्होंने (उसे) डिक्लेयर किया फिर !
कांतिभाई अभी काट देंगे।
(उसे) कहेंगे कि–'है' तो, थोड़ी (कुछ बरकत)–
हमारे पटेल, लुहाणा और सोनी–ये तीन,
उनके पास पांच हजार रुपए हों, तो पचास हजार का दिखावा करें।
और
टोपी टेढ़ी रखें। भई ऐसा क्यों ? तो जोश आ गया होगा !
पूछो पोपटभाई को, या रमेश को
और
बनिया हो–कांति देसाई जैसा,
पांच लाख होंगे ना ? तब भी कहेगा सूक्ष्म है। फटा कपड़ा पहनेगा।
इन्कम टैक्स ऑफिस में जायेगा तो (उसके कपड़ों में) छेद होंगे।
अरे ! इतना ज्यादा ? साहेब ये सब गलत बातें फैला रहे हैं।
मेरे पास तो खाने के लिए भी एक टाईम का ही है।
पांच लाख हों (उसके पास) !
यूं इसमें–गुणातीत ज्ञान में धीरज खूब चाहिए।
सुबह मैं बात कह रहा था; **महाराज के साधु अलग, गुणातीत के साधु अलग।**
कोठारी आए, प्रेमस्वामी–बेचारे,
सच में–उत्सव तो दो जनों ने किया।
दूसरे भी होंगे। हमारे माधवस्वामी !
मैंने कहा–अरे ! फिल्म लेनी हो, तो यह लो ना–वीडियो।
पंद्रह सौ बहनें तो सब्जी काट रही थीं।

कई कितने ही जने–यूं कितने तो कड़ाहे चढ़े हुए थे।
मैंने ऐसा सारा सीन अटलादरा में देखा था।
दो हजार युवक थे।
कांग्रेस वाले के.के. शाह बोले थे कि–
ऐसी सेशन में हमसे इतनी शिस्त नहीं रखवाई जा सकती।
यहां भी तुम देखो,
गुणातीतज्योत यानि—सारा शिस्तबद्ध काम!
मुझे, एक हमारे कोठारीस्वामी का लेक्चर एड करवाना था–तो भी,
मुझे शांतिभाई की इजाजत लेनी पड़े!
हां, उनके थ्रू ही जाया जाए।
पहले पूछना हो तो–अश्विनभाई को, शांतिभाई को, फिर साहेब।
फिर सुप्रीम कोर्ट पप्प और बा की आए।
यदि हम सीधे पूछने गए तो, यहां इंग्लीश सिस्टीम है।
'कम थ्रू प्रोपर चेनल!' (सभी हंसते हैं) 'क्या? कम थ्रू प्रोपर चेनल।'
(फिर खुद हंसते हैं।)
माफ करना, योगी परिवार है।
आज आनंद करने का दिन है। (पू. साहेब हंसते हैं।)
दूधपाक और मालपूड़ा खाने वाले हैं।
हमने एक कलश चढ़ा दिया–हरिप्रसादस्वामिजी ने।
हरिभक्तों से जो कुछ सोना भेंट दिया–इसमें लग गया।
भगवान जाने। जो भी हो वह।
तो **अब, एक कलश चढ़ गया—राजा।**
दूसरे कलश की बात अब शुरु हुई, आज से, यूं मानो।
वह कलश कौन-सा?
मैं कहता हूँ-**गुणातीत भावना वाले साधु बनो।**
स्वामी! हमें अब ऐसे साधु बनना है।
सो, यह उत्सव अच्छा निपट गया! हाँ, निपट गया।
लेकिन, मैं इसे अच्छा नहीं कहूँगा।
यूँ तो वहां भी मनाया। हम से दस गुना अधिक।

यहां 120 बीघे में आयोजन किया।
साथ-साथ किया, सब कुछ निर्विघ्न पार उतर गया।
हम भी जायन्ट व्हील लाए, फायन्ट व्हील लाए।
दीक्षा भी दी।
नारद ने एक घंटे में दस हजार साधु बनाए–दस हजार साधु!
लेकिन **महाराज बोले—मुझे वह रास नहीं आता।**
क्यों रास नहीं आये? क्योंकि उसमें भक्ति नहीं थी।
आज का सूत्र है–
प्रत्यक्ष की पराभक्ति, उसका पंचम् पुरुषार्थ–तीन पप्पा।
प्रत्यक्ष की! प्रगट की उपासना तो है ही,
लेकिन प्रगट की उपासना में–
निष्कुळानंदस्वामी भी हैं और गोपाळानंदस्वामी भी हैं; संकल्प की बीमारी!
मैंने अश्विनभाई को वर्षों पहले कहा था–सांकरदा में,
अश्विनभाई अब **हमें संकल्प की बीमारी टालनी हैं।**
यह ब्रह्मविद्या की कॉलेज शुरु हो गई।
दूसरी बात–एक रूचि वाले तो हों तो लाख–दो करोड़ के बराबर हों।
मैंने स्वामिजी को कहा–आज आप ज़रा सुरुचि का अर्थ समझाना।
पप्पाजी, मैं और साहेब भी—तीन एक होकर
जो कहें यह उच्च स्तरीय कैबिनेट–दो या तीन की
वह 'सूत्र' मानना।
स्वतंत्र भी हैं हर एक। स्वतंत्र–रॉकेट टाईप!
लेकिन समाज के लिए, **अब हमने कलश चढ़ाया, सो हमारी एक संस्था हुई।**
हमारे कोई 'रूल्स एन्ड रेग्युलेशन्स' भी तो हों!
ये–मेरा, तुम्हारा या दूसरे का–रीजीयोनल है सब।
सभी प्राईम मिनिस्टर्स हैं।
अनुपम वाले भी प्राईम मिनिस्टर, योगी डिवाईन वाले भी प्राईम मिनिस्टर।
यह कोई शिखर परिषद हो ना वैसा है?
ऐसा है यह हमारा–रीजीयोनल, गुणातीत सभा में।
इसलिए मुझे व पूछे–सत्यमित्रानंदगिरिजी कि

तुम्हारे यहां पीठाधीश कौन है?
वहां महंत है (न) वे–क्या नाम? 'प्रमुखस्वामी'।
मैंने कहा-**हमारे यहां जो ब्रह्मस्वरूप–गुणातीतस्वरूप में वर्ते वही पीठाधीश।**
तो बोले यह कैसे?
मैंने पूछा–दिशाएं कितनी?
तो बोले–चार। मैंने कहा–दस!
(फिर हंसते-हंसते कहते हैं।)
वे विचार में पड़ गये कि यह बड़ा अक्लवाला मिला!
(हंसते हैं-हा-हा-हा)
बहुत विचार में पड़ गए!
कुछ बात करने जायें, वहां तो तुरन्त ऐसा जवाब!
मैंने कहा, देखो भई-
हमारे–मेरे बाप ने लिखा है इसलिए इसमें मैं शंका करता नहीं।
जोगी महाराज कभी सपने में भी झूठ बोले नहीं–राईट?
(सभी बोलते हैं–राईट)
कभी सपने में भी नहीं बोलेंगे।
हम शायद नमक-मिर्च डाल दें। मैं और स्वामिजी।
पप्पाजी नहीं डालें–शायद, हं–नहीं डालते होंगे।
लेकिन बहनों की बात आए तो, वे भी थोड़ा डालें, हं। थोड़ा तो डालें यार।
हम तो यहां-वहां–
कोई भी भक्त हो, आज–कल का आया हुआ हो, पंजाब से आया हुआ हो,
तो भी डालेंगे।
मानो कि हम दो को यह हक़ दे ही दिया है कि तुम्हें डाला ही करना–डाला ही करना।
पप्पाजी–कोई शर्त पर, कोई छुटकारा न हो–आपत्ति धर्म आ पड़े,
और
वह भी खास उनकी बहनों का—स्पेश्यल, मुझ से अधिक पक्ष–यानि?
खत्म हो गया–सी!
देखो, ना बोलते हैं? 'ना' बोल सकें ऐसा हैं?
(सभी हंसते हैं। ख़ुद भी ताली बजा कर हंसते हैं।)

हां, जाहिर में सारी बात करता हूँ।
योगी परिवार है–योग परिवार।
क्या बात चलती थी ? दस दिशा।
वो सोच रहे थे–दस दिशा कैसे हुए।
मैंने कहा चार दिशा–उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम।
फिर उसके बीच में–उत्तर पूर्व के बीच में एक आती है, एक आती है, एक आती है और
ऊपर व नीचे–लो, बोलो। यूं दस दिशा!
इसी तरह, मैंने पूछा–
सौ में से सौ लो, फिर भी सौ बचें और सौ वापिस दिए जाएं;
यह गणित का पता है ?
तो (वो) बोले–नहीं।
मैंने कहा कि–
यहां जितने गुणातीत स्वरूप में, महाराज को जितने रखे–अखंड,
भगतजी जागास्वामी और अदा थे या नहीं ? तीनों ही पीठाधीश।
यदि एक–दूसरे का सहज भी तुम बोले,
भगतजी जागास्वामी थे, जागास्वामी–भगतजी थे,
भगतजी–अदा थे, अदा–भगतजी थे।
एक भूमिका—गुणातीतभावना की।
यह गुणातीत ज्ञान समझोगे तभी भेदभाव रहित–विरोधरहित,
उस भूमिका में अब आज से हमें जाना है।
एक कलश चढ़ गया।
अब गुणातीत समाज की हमारी एक संस्था बनी।
और
हम दोनों भाईयों को–मुझे अब 68वां वर्ष जा रहा है,
जबकि मैं अपने आप को पच्चीस साल का मानता हूँ।
तुम मानो या ना मानो, तुम जानो।
आज की तारीख में मैं अपने आपको मानता हूँ।
चार जनों को पीट दूं। एक यूं हाथ मारूं, एक लात मारूं, एक को यूं करूं।

फिर मुझे एक जना चाहिए, हॉस्पिटल ले जाने वाला-एम्ब्युलन्स....
(सभी हंसते हैं और ख़ुद भी ज़ोर से हंसते हैं।)
एक जना चाहिए यार।
तो–भी, पूरी हिम्मत से–ख़तम, टोटल
मेरे पास एक शब्द है—टोटल! टोटल!
क्या बात चल रही थी?
(सभी कहते हैं–दस दिशा।)
(ख़ुद बोलते हैं)–दस दिशा,
(लेकिन फिर कहते हैं)–दस दिशा नहीं, **गुणातीतभावना।**
इससे पहले 'गुणातीत ज्ञान' समझना पड़ेगा।
हम एक धूमकेतु हैं।
हां, यह बात चल रही थी, भूल गए–तुम लोग।
हम दोनों भाई–
मुझे 68 साल हुए, हं! लेकिन एक्च्यूअली–क्वॉलिटेटीली उम्र–
विनोबाभावे, गांधीजी, पंडित नेहरू–ये ऐसे पॉलिटिक्स में काम कर गए;
यहां शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महराज–
दातुन वहां दीया नहीं, दीया वहां दातुन नहीं।
ये–स्वामिजी दो-ढ़ाई बजे सोएं–नींद लें।
मैंने वो विनय (स्वामी) को पूछा–अरे, मालिश-वालिश?
बापू बोले–एकाध दिन-दो दिन कराया, लेकिन, स्वामी आते ही (हैं) दो बजे।
तब तक तो हमने दो नींद ले ली हो!
फिर उठते हैं कितने बजे? पांच बजे–चार बजे!
और
कहीं के कहीं! दूसरे दिन तो हम ढीले हो जाएं।
तो, एक इन्द्रियाँ, अंतःकरण–
अक्षरविहारीस्वामिजी ने कहा ना कि–
ये लोग–संतों ने जो काम किया है, तो एक बात पूरी हो गई अब।
अब यदि कसर रहती है–दूसरा या तीसरा रहता है,
तो वह हमारा है–गुणातीत समाज के ज्योतिर्धरों (का),

तुम्हारा नहीं।
धन्यवाद है–साथीदारों को, हरिभक्तों को, बहनों को–
ज्योति बहन, तारा बहन, हंसा बहन, देवी बहन, झमकु बहन–फमकु बहन सभी (को)।
वर्ना तो–हम दोनों भाईयों को मार डालते।
कैसी अशक्य वस्तु–अशक्य वस्तु।
मेरी दृष्टि से, पप्पाजी ने अभी नया प्रकरण–मर्यादा का भी बहुत चलाया है।
मर्यादित, फिर भी अमर्यादित।
देखो, यहां कोई लाल कपड़ा दिखाई देता है–साधु (ओं) में, देखो?–बहनों।
फिर भी सभी सुन सकते हैं।
तो उनकी स्वतंत्र व्यवस्था अब कर सकें।
एक स्त्री–पुरुष मर्यादा भी है।
फिर भी, सनातन धर्म की रीति से उन्हें भी इतना ही इक्वल अधिकार है।
यह एक व्यवस्था के लिए था।
लेकिन (तब) ऐसा वर्ग नहीं था,
सो महाराज ने दीवार में वह आला भरवा दिया था।
अब भी हमें वह मर्यादा पूरी पालनी है।
ब्रह्मरूप में–ब्राह्मण में अक्षरधा की यदि यह सभा मानो तो,
स्त्री–पुरुष भाव (यहाँ) कहां से आया?
और
यह दृष्टि अब विकसित हो रही है। वह सेकेण्ड शुरुआत हुई।
तो आज अब मेरा मंगलाचरण (यहां) पूरा होता है। अब मैं बात करता हूँ।
कोठारीस्वामी को मैंने कहा–प्रेमस्वामी को कि–
तुम्हें ऐसा साधु बनना है कि जहां मन का आभास भी ना हो।
तुम ऐसा नहीं कह सकोगे कि तुम्हें मन का आभास नहीं।
सिद्ध होंगे, सर्वज्ञ होंगे, गोपाळानंद होंगे,
अष्टांगयोगी होंगे, सांख्य विचार वाले होंगे, तपस्वी होंगे,
करोड़ों लोगों को शायद सत्संग भी कराते होंगे,
लेकिन तुम अखंड ब्रह्मस्वरूप भाव में सावधानी के योग से वर्त नहीं सकोगे।

हमें (मुझे), पप्पाजी को, हरिप्रसादस्वामिजी को,
फिर साहेब को–यहां 'ठहरावरहित गुरुमुखी' वे वर्ते।
स्लेब भरना था, तो भी कहें कि महाराज जानें–महाराज जानें।
अरे! लेकिन महाराज कैसे जानें? पर यहां सीमेन्ट नहीं है।
तो–वह भी महाराज जानें!
अरे! कल भंडारा करना है और कल ठाकुरजी को थाल लगाना है–
यहां कुछ है नहीं।
महाराज जानें–सब महाराज ही करेंगे।
ऐसी जो धीरज से—'ठहरावरहित गुरुमुखी' की शुरुआत हुई,
तब जाकर इस ब्रह्मविद्या की कॉलेज में एन्ट्री मिली है।
सो, संकल्प की बीमारी पहले हमारी टली?
वर्ना तो कनिष्ठ मुक्त हैं।
ब्रह्मरूप ही हैं, निर्दोषबुद्धि भी है, भगवान में जुड़े हुए भी हैं,
लेकिन हम भी? हैं!
वो–हमारी मणीबहन को हम कई बार कहते–
पप्पाजी और हम दोनों ही–कि मणीबहन, धर्मज (भीतर से) गया?
मेरे बहनोई आए थे। यह फ्लैट, हमने (उनसे) लिया था।
पप्पाजी बहुत ही–बहुत ही प्रखर (चुस्त) अडिग–स्वधर्म के राजा–अंतर्दृष्टि के।
हम और हरिप्रसादस्वामिजी दूसरी ओर,
एक अल्प संबंध वाला भी आया हो तो भी–
तू सर का ताज–यूं भी वर्तना (पड़े)
और
वो कहे कि ना भाई, स्वधर्मयुक्त व्यवहार करना हो तो (ही)!
सो–हम थोड़े फंस भी जायें।
उसका–छूत का रोग भी लग जाए।
लेकिन, अब भगवान की दया कि सभी मिल कर करें तो नहीं लगेगा।
माया परम सुखदायी। ऐसा हमारा कल का उत्सव हो गया। हकीकत है।
लेकिन, बापा की रीत कोई अनोखी थी। ऐसा हम नहीं बरत पायेंगे।
छोटी से छोटी, भले कैसी ही हो तो भी–

उन्होंने एक छोटी से छोटी आज्ञा भी पाली है।
इस जमाने में पाली नहीं जा सकती।
इसलिए हमने वर्णाश्रम धर्म में थोड़ी छूट रखी।
लेकिन, **एक ऐसा तरीका भी ला सकते है,**
जिससे किसी को भी–ज़रा भी तकलीफ़ ना हो;
ऐसी व्यवस्था हम करना चाहते हैं–महाराज को रख कर।
और उसका एक सूत्र है–
सर्वदेशीयता और अखंड सद्भाव व सुहृद्भाव।
पांच मिल कर करो, नहीं तो तीन–
ब्रह्मा, विष्णु, महेश–सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्।
अभी भी, प्रचलित कोई युगधर्म हमें बदलना हो—
जैसे कि हमने वर्णाश्रम धर्म को थोड़ा गौण किया है,
नहीं–खूब गौण किया है।
अकेले (हाथ)–
सिर्फ योगीजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज कर सकते हैं।
युगधर्म–चाहे कैसा भी हो–वे बदल सकते हैं।
मुझे बापू ने कहा है कि–
देखो उन्होंने बहुत 'क्रांतिकारी'–
मैंने कहा–नहीं यह क्रांतिकारी कदम नहीं उठाया उन्होंने।
क्रांतिकारी कदम में रिवोल्यूशन आयेगा–कोम्युनिस्ट जैसा।
यहां कोम्युनिज़म नहीं है। यहां डेमोक्रसी है।
और
इसमें क्रियेटिव माईनॉरिट-दो या तीन,
याज्ञवल्कल–स्मृति का दो सौ चौरासीवां या ऐसा श्लोक–उसके सारे पद हैं।
फिर आया अंबरीष दीक्षा का (कार्य)
वैसे अब–ऐसे जो-जो भी क्रांतिकारी चेन्जिज़ करो–वो पांच मिल कर (करो)।
एक संविधान है (हमारा), एक सुप्रीम कॉऊन्सिल है।
और
फिर दुनिया को जो कहना हो भले कहे। हमारे लिए कोई जगत है नहीं।

क्योंकि हम दस दिशाओं से पर हैं।
इस गुरुत्वाकर्षण में ही नहीं–दिशा ही नहीं यहाँ।
और जो दिशा के पार–गुरुत्वाकर्षण के पार चला गया,
माया के आकर्षण से पार–डूंटी (नाभि) से ऊपर चला गया,
वहां फिर इच्छा नहीं, अपेक्षा नहीं, अहं नहीं।
ये तीनों बातें नहीं है।
वहां क्या है? धाम, धामी और मुक्त! (भगवान, संत और सत्संगी–भगवदी)
अब हमारी बात आई–
ब्रह्मरंध्र से पर, महाशून्य में।
वहां मन (जो) है–अकेला मन पार नहीं जा सकता।
(चाहे) मुक्त हों, फिर भी विपरीत परिस्थितियाँ बाधारूप बनेंगी।
बड़ों-बड़ों को बनी हैं।
भगतजी, जागास्वामी और अदा के (जो) शिष्य–परमशिष्य थे।
देखो, एक उदाहरण कहता हूँ आज।
झवेरीलाल–भगतजी के अनन्य (निजी कहे जाने वाले) राईट?
स्वामी, राईट–झवेरीलाल?
(स्वामिजी कहते हैं–राईट)
राईट, राईट।
हम, स्वामिजी, पप्पाजी (जो) कहें वह श्रुति कही जाए–हं।
श्रुति, स्मृति नहीं–ध्यान रखना।
(यदि) अकेले करें (तो) वह श्रुति (भी)—स्मृति होगी।
वो झवेरीलाल के दिमाग में एक बार शेखी चढ़ी।
(भगतजी) नड़ियाद गये (होंगे); उस समय टांगे वाला दो आने लेता था।
भगतजी, उसका (झवेरीलाल का) स्वरूप–गुरुहरि। हें?
राईट हैन्ड कहा जाये। (मानो) फेफड़ा–एक ओर का।
तो, उसने कहा कि–
एक बार गये, दूसरी बार भगतजी महाराज गए नड़ियाद,
तीसरी बार गए–तो, बोले कि क्या मैं ही मिला हूँ?
अरे! डफ़र; तू मुझे कह रहा है (यह)?

मैं ही मिला हूँ–यानि ? तेरे बाप का है यह ? प्रागा प्रभु का है–
ऐसा कहना पड़ा भगतजी महाराज को।
देखो, सम्यक् प्रकार से–चौदह (प्रकरण) की इक्यावनवीं बात।
नहीं तो मारपीट कर–(प्रकरण) पहले की 337वीं–
ब्रह्मरूप करना ही है, सभी (को) एकांतिक करना ही है।
सभी को इस प्रकार के, एकांतिक धर्म में
गुणातीतभावना में ले ही जाना है।
तो, मार खा कर करना है
या सुखी–दुःखी (रह कर) या सुख–सुख से ?
आज सुख–सुख से करने की रीति शुरु होती है।
और इसी लिए हम कहते हैं–
दो ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकृति वाले—भिन्न-भिन्न प्रकृति वाले
अलग-अलग प्रवाहों में मानने वाले—
अक्षरविहारीजी,स्वामिजी–किसी को भी,
और वह भी यदि एक रसरूप–पंजा-पंजा।
इसमें एक उंगली यूं (टेढ़ी) होगी, तो फोर्स नहीं आएगा।
आखिर तीन तो लो ही, कोई भी।
इससे–माया उसे पराभव नहीं कर पायेगी।
तुम सक्रिय काम कर सकोगे।
तो सबसे पहली बात–ऐसे साधु होना है।
साधु के साधु–गुणातीत के साधु।
उसमें बहुत फर्क है।
उसमें सभी गुण होंगे, लेकिन तीन चाहिए–महाराज के साधु में।
स्वधर्मनिष्ठा, आत्मनिष्ठा, स्वरूपनिष्ठा–महाराज की उपासना के साथ।
उसमें–समता; पहले आएगी साधुता
साधुता यानि सहन करना।
दो-पांच जनों का (भी) तुम सहन कर सकते हो क्या ?
तुम्हारे भीतर में ही तुम्हारी एकता है क्या ?
और ऐसी आत्मबुद्धि होगी–फिर प्रीति।

पहले सहन करना। **आपस-आपस का भी चला लेना।**

महाराज में से आए (महाराज की प्रेरणा हो) वह करने की बात तो बाद की है।

स्थितप्रज्ञ तो पहले होना ही पड़ेगा।

प्रज्ञा की स्थिरता, मन की शांति, चित्त की निर्मलता, बुद्धि की स्थिरता, ऋतंभरा प्रज्ञा!

वह हमारी भीतर में ही अभी नहीं (है)। गड़बड़ी हमारे अंदर ही है।

तो सबसे पहले–साधुता। साधु हुए सो–साधुता।

भई, ये साधु है या त्यागी?

त्यागी हो वह हकदावा रखेगा, त्यागी हो वह जल जैसा।

उसे–त्यागी को जो बात करो उस रूप वह हो जाएगा।

उसे उल्झन (बेचैनी) रहती है।

यदि तुम्हें किसी भी प्रकार की उल्झन (बेचैनी) है, तो तुम त्यागी हो–साधु नहीं।

साधु, भगवान–

स्वामिजी ने बात करी ना? कि–भगवान साधे वह साधु।

साधु–सूर्य समान? साधु–गुणातीत, अक्षरब्रह्म का स्वरूप।

और महाराज तो पर के पर। अनंत सूर्यो के सूर्य।

यह बात, कल ही स्वामिजी ने भी कही कि तुम अपने आपको

अक्षर–ब्रह्मरूप मानो।

पप्पाजी कहते हैं धामरूप अक्षर मानो।

गुणातीत ने कहाः पहले प्रकरण की 285-258, तीन जगह पर-

रमणीक भाई! तुम अक्षररूप हो–ब्रह्मरूप हो, निर्विकल्प निश्चय हो गया!

अरे बापा! तीन नंबर की चाय चाहिए–यह चाहिए;

गोरी–गोरी लड़कियों पर नज़र चली जाती है।

अभी कहता है–वो (मकई का) चिड़वा! हमारा मुकुंदजीवन,

(देखो) इतने सालों के बाद भी! विचार तो करो।

इतने वर्षों के बाद भी कहता है कि–

मुझे चिड़वा भी भाये और स्वरूप भी भाये? हं?

जैसी मीना कुमारी वैसी देवी बहन भी उसे सरीखी क्या?

अरे बाप रे! यह कहां से अंदर भर गया?

चित्त तो ऐसा है–

अचित्यानंद ब्रह्मचारी और विद्यात्रानंद गए थे–भूले पड़ गए।
तो, हमारे यहां, ताड़देव में एक बाई आती है, **सब्जी बेचने वाली–**
ऐसे भोलेपन से बोलती है– बाबाजी, बाबाजी उस ओर जाओ।
परन्तु, बाबाजी तो बहुत नियम वाले–तो यूं करे (मुंह फेर कर बोले);
ओ बाई-बाई रास्ता बताओ, रास्ता बताओ।
अरे बाबाजी!
उसने वो चारे की गठरी सिर से नीचे उतारी,
फिर बोली–
बाबाजी ज़रा (इधर) देखो तो बताऊं ना?
यहां चार रास्ते हैं।
मैं कहता हूँ–हमारे यहां–रायशी के यहाँ सात रास्ते हैं।
वहां क्या करोगे?
दो जनों को पूछना पड़ेगा। (वर्ना) कहीं घोटाला हो जाए;
दो जनों को पूछना पड़ता है।
यहां तो अनंत रास्ते हैं। किस रास्ते से तुम चलोगे?
उसमें कोई (कुछ) कहेगा, तो वहां दूसरा कहेगा–अरे! यहां कहां फंसा?
यूं कर।
एक कहेगा कि आत्मनिष्ठा क्यों करता है? तू यही करना–यही बस है अब।
अरे! यह तो गुंबद है, यहां दर्शन करने की तुझे क्या जरूरत है?
यह तो पुतले हैं। इस गुंबद में महाराज के पुतले हैं।
ये प्रगट स्वरूप मिल गए, अब छोड़ ना–और सब।
बहुत प्रकार के शब्द आएंगे।
तब, तुम (यदि) महाराज में से आए पुरुष से जुड़े होंगे,
तो हर्जा नहीं आयेगा–विज्ञानस्वामी की तरह।
शास्त्रीजी महाराज ने कहा था, फिर भी उन्होंने माना नहीं था।
(फिर) उसे महाराज ने प्रगट अनुभव करवाया।
आज भी, ज़रा भी परेशानी, विक्षेप आाए वहां—
जोगी महाराज, जोगी महाराज, जोगी महाराज।
हे बापा! आप प्रगट ही हो, मुझे प्रेरणा करो।

किसी का–इसमें किसी का भी कुछ चलेगा नहीं।
हमारा या दूसरे किसी का भी (नहीं चलेगा)।
और
बापा तुम्हें ज़रा भी गलत रास्ते पर बिलकुल भटके नहीं देंगे–
यह हमारा पहला अनुभव है।
आज साक्षात्कार के दिन–
मेरा जो एक साक्षात्कार–वह दृष्टा स्थापित हो जाने की बात नहीं है।
वह मन, बुद्धि, चित्त, अहं और प्राण का
टोटल दिव्यता के रूपांतर का साक्षात्कार है।
ज्ञान समाधि का साक्षात्कार है।
और
इसीलिए यह जंग खेली और उसमें विजयी-विजयी हुए।
एक कलश चढ़ गया।
सांकरदा में मैंने यह कहा था।
सब विरोध हुआ, तब बापा ने कहा–
भई! उसने (काकाजी ने) शास्त्रीजी महाराज को राजी किया है।
नंदाजी आए, गवर्नर आए।
तुम्हारे में से कई कितने तो उस वक्त हीं होंगे।
तब मैंने सतुभाई को–ये फकीरभाई को कहा था,
भई! तुम सांईबाबा को मानते हो–ठीक है,
लेकिन (हमारे) यहां वृत्ति की निर्मूलता है। राईट?
हां-हां (हंसते हैं।)
तो आज धन्यवाद है।
अब तो पप्पाजी और वे आशीर्वाद दें।
हमने एक नई जंग शुरु करी है।
साधुता, फिर समता।
मान-अपमान में एकता, सुख-दुख में समभाव।
हानि में, वृद्धि में, जय में, पराजय में, स्त्री और पुरुष में–
एक प्राणवायु के ऊपर चलती देह है।

वह शक्ति और हम संकल्प!
प्रकृति-पुरुष से परे का यह ज्ञान।
ज्ञान यानि स्वरूप।
ज्ञान यानि जानना नहीं—चार वेद से।
'ब्रह्मज्ञ'—पांचवें वेद से शुरु होता ह।
मेरे लिए, मुझे मिले हुए–
मेरे गुरुहरि में परात्पर ऐसे पुरुषोत्तमनारायण अखंड विराजमान हैं।
मेरे साक्षी रूप भगवान और बाहर प्रगट दिखता–
मूर्तिमान जो स्वरूप है वह–स्वरूपी को (महाराज को) रखे हुए हैं।
मेरे लिए वे स्वामिनारायण का मूर्तिमान स्वरूप हैं,
और
वे मेरी आत्मा में अखंड विराजमान हैं—तो साक्षीभेदन होगा।
साक्षीभेदन हुआ? तो मन रहेगा नहीं।
मन है? तो भेदा नहीं गया।
(यदि) सत्पुरुष पहुँचा हुआ नहीं होगा तो,
उसमें जुड़ा हुआ भी कहां का कहां नर्क में चला जाएगा–
यूं कहते हैं।
कल स्वामी ने दो-चार यूं कहा कि–
पौईन्ट वन-वन-वन डिफेक्ट यदि गुणातीत स्वरूप में होगी, तो.....
(प.पू. स्वामिजी बीच में बोले–
गुणातीत स्वरूप (में) नहीं, किसी संत में–)
प.पू. काकाजी ने पूछा-हं?
(तो प.पू. स्वामिजी फिर बोले–)
'किसी संत में'–यूं। गुणातीत स्वरूप में नहीं।)
क्या? क्या कह रहे हैं?
'किसी साधु में'–ऐसे कुछ दो–तीन बार स्वामी बोले कि–
पौईन्ट ज़ीरो-ज़ीरो (कसर) होगी तो 10-15 प्रतिशत उसके चेले में आएगी।
साधु की बात भी जाने दो,
हम गुणातीत स्वरूप में भी एक छींट (मात्र कसर) होगी,

तो चेले में 10-15 प्रतिशत आएगी।
और
यह गोपाळानंदस्वामी के ज्ञान की परम्परा नहीं चलती।
यह कोई मेरा अभाव-अवगुण नहीं, पर गुणातीत परम्परा-शुद्ध परम्परा है।
अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना की शुद्ध परम्परा है।
शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को
डेढ़ सौ साल के बाद भी भीख मांगनी पड़ी।
(मिट्टी के तेल के) डिब्बे में खिचड़ी पकानी पड़ी–सारंगपुर में।
चालीस वर्ष में–योगीजी महाराज का
एक दिन भी ऐसा नहीं गया कि अपमान सहन (नहीं) करना पड़ा हो।
वह विरासत आज हमें मिली है।
हमारी एक जिम्मेदारी आज से खूब-खूब बढ़ गई है।
खूब बढ़ी देश-विदेश में।
काल, कर्म, माया, प्रकृति-स्वभाव से परे ब्रह्मतत्त्व–
जिसे स्थानभेद नहीं कालभेद नहीं, मायाभेद नहीं, स्त्री-पुरुष भेद नहीं।
जहां देखो वहां–जहां देखो वहां–सभी में वासुदेव;
निवास करे हुए ऐसे मेरे अक्षरब्रह्म–मेरा जोगी-जोगी महाराज, जोगी महाराज।
आज कोई स्वयं जोगी महाराज नहीं।
लेकिन, **महाराज और स्वामी को रखे हुए कोई भी हम दो जन मिल कर करें–**
एक संस्था के रूप में काम बाहर आयेगा।
स्वतंत्र भी हैं।
लेकिन, फिर अनादि महामुक्त के रूप में हमारी संपूर्ण जिम्मेदारी (बनती है)।
महाराज की पूरी-पूरी कन्सेन्ट मिली है क्या?
यदि मिली ही हो तो वहां विरोध नहीं, विक्षेप नहीं, अंधेरा नहीं।
शांति, सुख, आनंद-उसका आनंदोत्सव है।
तो, ये सारी वस्तु–मुझे बहुत कुछ तो कहनी रही।
आज तो मुझे टाईम भी बहुत दिया।
मूल में अब, पूर्णाहुति करता हूँ, दो-पांच मिनिट में।
जहां-जहां एक रुचि वाले–एक रुचि वाले दो या तीन मुक्त हों,

हमारे लिए–पहले प्रकरण की 337, चौथे प्रकरण की 107 और 181 बारहवें प्रकरण की–
इन तीनों बातों के मुताबिक–
ऐसे दो, एक रुचि वाले दो भी हों–तो दो लाख, सुरुचि (वाले) हों तो–दो करोड़!
कैसे तुम तोल लगाओगे?
वह तराजू–बोरियाँ तोलने का दो किलो वज़न तो वैसे ही कम ज्यादा होता है।
यह हीरा नापने की (तोलने की) स्केल है।
आज नारायणी सेना इतनी बढ़ी–
इतनी बहनें बढ़ी, इतने पार्षद बढ़े, इतने अंबरीष दीक्षा वाले बढ़े।
यह सारी नारायणी सेना है।
ऐसे दो–एक रुचि वाले, एक रुचि वाले यानि क्या?
वह **पप्पाजी और स्वामिजी तुम्हें ठीक से समझाएंगे–वह मान्य करना है।**
मेरा (किया) अर्थ शायद तुम्हें नहीं जँचेगा। बुरा भी लग जायेगा।
क्योंकि? मर कर भीतर में जाना पड़े–इसलिए!
(और) मरने के लिए हम एकदम तैयार नहीं हैं।
थोड़ी-थोड़ी (प्राण की भूख़) टिकने दें–ऐसा हैं।
तो, निर्गुणभाव में रह कर करो–दुर्वासा की तरह।
हमारा नौकार मंत्र-पांच को साथ में लेकर करो।
मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा है कि–
यदि मेरी अकेले की महिमा गाओगे, तो मेरी अपकीर्ति कराओगे।
अकेले हाथ यह नहीं बना।
ज्योत भी अकेले हाथ नहीं बनी।
योगी डिवाईन सोसाईटी का यह उत्सव हुआ, वह भी अकेले हाथ नहीं हुआ।
प्रेरणा तो बापा की और महाराज की। **स्वामिजी टोटल निमित्त बने हैं।**
हम 68 वर्ष में–रिटायर जैसे।
पप्पाजी ख़ुद भी कहते हैं।
आज ऐसे वारिसदार–
हरिप्रसादजी, अक्षरविहारीजी, साहेब, हरिभाई-ये लोग,
हमारे यहां दिनकरभाई जैसे–
इन सभी के लिए हम उमंग–भरे दिल से चाहते हैं कि–

अहो! तुम हाथी पर बैठ कर बापा का संदेशा फैलाओ।
हम रिटायर, रिटायर यानि–उस प्रकार से नहीं,
लेकिन एक्टिवली काम तुम करो।
हम एक फाईनल–आकाश में (से) नेपथ्य में से–देने वाले–
एडवाईज़री पॉलिसी के अंदर कुछ चलता रहता हो,
बवंडर आने वाला हो,
तो हम सूचित करेंगे–भई, यह बवंडर आ रहा है।
आप ज़रा ऐसी प्रोटेक्शन रखना।
वहां रखना है–सुहृद्भाव, सद्भाव–सुहृदभाव।
कोई भी (दो) पांच जने
भिन्न-भिन्न प्रकृति वाले, अलग-अलग प्रकृति वाले (हों),
लेकिन (यदि) एक रुचि वाले होकर निर्णय लोगे,
माया (से) कभी भी पराजित नहीं होओगे।
उसकी आज (की)–यह साक्षात्कार दिन या ज्ञान समाधि का साक्षात्कार–
जो कहो वह (यह चाबी–भेंट)।
पांच भेद में काम करना बहुत मुश्किल है।
चाहे कैसी ही स्थिति को पहुँचे होंगे–ब्राह्मीस्थिति होगी,
मंदिर में रहते होंगे, तुम्हारे रुचि वाले मंडल में रहते होंगे,
कोई विरोध नहीं करेगा; लेकिन बाहर निकलो।
एक जन गया था–स्वामी जानते हैं।
और वहां गए–अमेरिका में; पता नहीं कोई गांव था–
मुझे ऐसी रिपोर्ट मिली थी।
'क्यों आए हो? क्या है?'
इतना अंट-शंट बोलने लगा, इतना अधिक बोलने लगा।
स्वामी बोले–अब क्या करें यहाँ?
आये हैं तो उसके घर! ऐसा कुछ था–भगवान जाने।
लेकिन स्वामी घूंट पी गए। उसे समझाएं भी क्या?
मैं मानता हूँ–मामा का कोई रिश्तेदार या ऐसा ही कोई था।
ऐसा तो बापा का पल-पल अपमान हुआ है।

उन्हें केरिया गांव में फैंक दिया था–मंदिर में से।
अरे, शाम तक तो तू रहने दे।
नहीं, तुम विद्रोही हो।
बापा तो बोले नहीं।
इसका महाराज पहले भला करना।
यह मुझे दुश्मन जैसा (समझता है पर)–
मेरे लिए तो कोई दुश्मन है नहीं, कुसंगी से भी मुझे द्वेष नहीं रखना।
लेकिन समझना तो पड़ेगा ही।
शायद कई बार जो मैं कहता हूँ, समझने के लिए कहता हूँ।
तो, प्राप्ति तो बहुत बड़ी (हुई) है।
साधु यानि–गुण से परे होना ही पड़ेगा।
सिद्ध हों, सर्वज्ञ हों, गोपाळानंद हों तो भी–
संकल्प की बीमारी–हीन कक्षा के भी रहो या नहीं, ऐश्वर्य–प्रताप जुलूसों में।
आज धन्य हैं–पप्पाजी को कि हमें किसी भी–कोई भी बड़प्पन की पड़ी नहीं।
क्योंकि सारा देख लिया है।
लेकिन, **एक बड़प्पन है–साधुता का।**
ओहो हो! हमारा निष्कामजीवन है–हमारे सांकरदा (में)–तुम देखो–
उस औलिया को।
उसे यदि परेशान किया–महंत को परेशान किया,
तो सारा कमाया करा खत्म हो जायेगा।
यह योगीजी महाराज बोले हैं–तीर्थगीता में।
शास्त्रीजी महाराज की चाहे कितनी ही सेवा करी होगी;
लेकिन योगीजी महाराज के दिल को सहज ज़रा भी दुःखी किया,
तो सब कुछ गंवा दोगे।
आज हरिप्रसादस्वामिजी की–पप्पाजी की चाहे कितनी भी सेवा करी होगी,
लेकिन उनके मिले–कोठारी और प्रेमस्वामी जैसे का तुम ज़रा भी दिल दुःखाओगे–
(तो) करा (हुआ) सब खत्म हो जाएगा।
भले मेरी बात मानी जाए या नहीं मानी जाए,
पर तुम दूधपाक और मालपूड़ा जरूर खाना।

लेकिन यह एक हकीकत बता रहा हूँ।
अब इस प्रकार की–
दोबारा हमें सेकेन्ड लाईन ऑफ लीडरशिप की एक शिविर करनी है।
उस शिविर में ये (बातें) आएंगी।
आज हमें, स्वामिजी को या पप्पाजी को कोई फर्क नहीं हैं।
साहेब जैसों की शोभायात्रा निकालो, तो भी हमें खूब खुशी है।
मैंने कहा–बापू तूझे भी (हाथी पर) चढ़ जाना हो तो चढ़ जा।
लेकिन हाथी पर बैठ कर यदि (मान में) झूला–तो,
ओहो! मुझे फिर जैसे गधा मिल (था);
बापा के साथ मुझे भी इन लोगों ने गल्त चढ़ा दिया था–ऊपर।
तो, मैं तो खूब खुश हुआ।
और
फिर सबको दिखाने लगा कि देखो मैं हाथी पर बैठा हूँ;
ओ, अंबुभाई कैसे हो? ठीक हो?
कहने का मतलब कि–देखो अंबुभाई, मुझे देखो, मैं हाथी पर बैठा हूँ।
बड़ौदा में सवारी निकली थी।
वो छगनभाई–छगन नारण हम से सात सौ रुपए तनख़्वाह लेता था।
पैसे के कारण मुझे 'छोटा योगी' कहता।
और
मुझे ऊपर चढ़ा दिया–पकड़ कर। मुझे बैठना नहीं था।
मैं जानता था कि (यदि) ऊपर बैठे तो फिर नीचे गिरना ही है।
अभी हम इम्युन नहीं हुए–रॉकेट टाईप,
कि–
वहां से जाकर वापिस आए–ऐसा।
इस हेतु तो मूर्ति में अखंड ही रहना पड़े।
तो, यूं बैठा–
वहां तो हर्षदभाई और उन्हें तो ऐसा–
ब्राह्मण होता है ना? उसकी आंख में ज़हर होता है।
वह लाल-लाल हो गया कि–

(इसका) हकदार मैं–ट्रस्टी; मणीभाई सलाडवाले को (भी) नहीं बिठाया!
क्योंकि–छगनभाई को उस समय मुझ से स्वार्थ था।
तो पकड़ कर बिठा दिया–फकीरभाई।
और एक दूसरा कोई था,
बेचरकाका को बिठाया–हं–हम दोनों को।
और मैं खुश से फूला नहीं समाया। मैं भी तो चढ़ गया आरे पर!
ऊपर चढ़ा, सो फिर भूल गया नीचे का सब।
ऊपर चढ़ा, सो फिर जो आए–देखे, तो।
ओहो, मंगलभाई कैसे हो?
रावजीभाई, वो हमारा एजेन्ट–बड़ौदा वाला–फर्टिलाईज़र का!
(वह) तो, अभी पांडुरंग में बहुत काम कर रहा है।
क्यों रावजीभाई?
मतलब कि तुम मुझे देखो–मैं हाथी पर बैठा हूँ।
पर, पता नहीं था कि हाथी पर बैठो तो–
बापा गधे को (तुरन्त तैयार) रखते हैं–गुणातीत ज्ञान में।
यह महाराज का ज्ञान नहीं कि–
वहां धर्मपुर में शोभा यात्रा में हाथी पर चढ़े,
और
गुणातीत (मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी) आए, तब भी वह मूर्ख नीचे उतरा नहीं।
स्वामी जैसे आएं तब तो उतरना चाहिए? हं।
तो मुकुंदजीवन कहता था–कहां मुकुंदजीवन?
और वह भी फिर 'बड़े मियाँ' होकर घूमे! तो , हड्डियाँ भी साबुत नहीं रहे।
बड़े मियां होकर घूमना, यह कोई खाने का खेल है?
तो, मूर्ति में रहना पड़े।
ऐसी प्रसन्नता प्राप्त कर लेनी चाहिए।
(हां) उसकी आज्ञा हो कि—जाओ तुम करो, तो हर्जा नहीं आयेगा।
यह एकता हमें स्थापित करनी है।
पंजाब में भी उत्तम और मुकुंद एक ही प्लेटफार्म पर (काम करें)।
पप्पाजी पहले भी कहते थे कि–

हे महापुरुषस्वामी! तुम, अक्षरविहारीजी और पांच संत–
हे! कोठारी और प्रेमस्वामी–यदि पांच मिल कर करोगे;
तो, मूसल में से संगीत निकालेगा।
तो, गधे की गाय हो जाएगी।
तो, केक्टस को केले आएंगे।
अभी तक हम यह नहीं कर पाए हैं।
बड़े से बड़ी मिस्टेक (गलती)–भूल हो तो वह हमारी।
सबसे पहली इस साक्षात्कार के दिन–दादुकाका की।
मुझे–मैं शूरवीर योद्धा हूँ,
किसी की मोहब्बत की पड़ी नहीं।
बापू जैसे चेलों की भी पड़ी नहीं।
वह ना हो तो भी पांच पोटले उठा सकता हूं।
सो, मुझे उसके अंकुश में दबने की बिल्कुल जरूरत नहीं।
कुछ भी हो, एक प्रतिशत भी नहीं।
सो, महाराज यानि–एक महाराज।
लेकिन सच में हमें ऐसा बल मिले, हम ऐसी सेवा–
सेवक के सेवक–
स्वामी ने कल कितने अच्छे सूत्र कहे?
अभी हम पूर्ण नहीं हैं।
पर जो मिले हैं वे–पूर्ण नहीं, बल्कि सम्पूर्ण हैं–जोगी महाराज!
और हम पूर्ण होने का प्रयत्न कर रहे हैं।
तो,
जहां पूर्णता हो वहां आनंद होगा, वहां शांति होगी।
वहां पीस ऑफ माईन्ड नहीं, 'इटर्नल काम'–एक अंग्रेजी शब्द देखना।
उसमें से एक आनंद।
आनंद से अधिक–आनंदब्रह्म से भी (अधिक), एक 'सनातन ब्रह्म' विशिष्ट है।
उसका नाम सहजावस्था।
सहजानंद की सहजावस्था की कोन्सियसनेस,
कृष्ण कोन्सियसनेस नहीं।

यह (है) अक्षरब्रह्म की कोन्सियनेस की बात,
(जो) आज तो बहुत कर दी–बहुत समझे।
तुम–**काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी (की) इस कैबिनेट में**
(चाहे) भले जो भी (आपने) ठान ली हो, (तब) भी पड़ना नहीं।
(हाँ-हाँ) देखे (तुम्हारे) हरिभाई, देखे तुम्हारे साहेब,
देखे पप्पा-काका—'गृहस्थी'—
यूं बिलकुल मानना नहीं।
मानो तो भगवान तुम्हारा भला करें–बहुत भला करें पहले,
क्योंकि मैं जानता हूँ कि हड्डियाँ भी नहीं बचेंगी।
तो, **यह बात (खूब) समझने जैसी है।**
बड़े पुरुषों में बिलकुल पड़ने जैसा हीं, बिलकुल नहीं पड़ना
बापा को तो सत्य मानते हो ना?
हाँ कहते हो तो समझो–'हाँ'–यानि क्या?
ऊपर-ऊपर से 'हां' नहीं।
अति बड़े पुरुष में-
मुझे तो निर्दोषबुद्धि का राजा कहा है।
पप्पाजी का भी बड़प्पन मैं समझता हूँ।
उनकी तरह संकल्परहित मुझ से अभी वर्ता (नहीं) जाता।
हम जल्दबाजी कर देते हैं। दया आ जाती है।
दया, लगाव और प्रीति भी बंधन–भरतजी जैसी! दया, लगाव और प्रीति भी नहीं।
महाराज जो प्रेरणा करें—महाराज में से आये वही करना है।
मेरे इक्यावन भूतों का कब्जा तू ले ले–कंट्रोल।
और ऐसे वर्तने वाले दो जनों के साथ,
उनके (स्वरूप के) मिले हुए व प्रसन्नता वालों के साथ-
ऐसे हमारे बड़ौदा के भगतजी–जो सब (हकीकतें) जानते हैं।
जागास्वामी की बात के समय मुझे ले गये थे–ये रमणभाई।
और वहां अपमान हुआ, (हमें) बुलाया नहीं।
उन्हें बुरा लगा।
मैंने कहा–नहीं, ये तो हमारे लिए साधु के आभूषण हैं।

हमें बिल्कुल नहीं लगेगा–रमणभाई।
और अब एक दिन हमारा डंका ऐस बजेगा कि हमें विरोध कोई है नहीं–हमें।
वे उनका पुण्य हमें देने वाले हैं।
तो,
प्राईम मिनिस्टर मुझे पूछता है–वह चीफ़ मिनिस्टर कि–
तुम्हारे वहां की भी सभा बहुत बड़ी और यहां की भी? फर्क क्या है (दोनों में)?
मैंने कहा–हम किसी की टीका-चर्चा की बात (बुराई) नहीं करेंगे।
और जो हमारा विरोध करते लगें, हम उनका पहले भला चाहेंगे।
यह हमारी गुणातीत परंपरा है।
और
वह भावना हम संपूर्ण नहीं कर पाए हों, पर जरूर करेंगे—जरूर करेंगे।
उसमें हमें किसी की मोहब्बत नहीं।
हमें शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की शान बढ़ानी है।
तुमने हमें खूब-खूब सहकार दिया–बहनों, भाईयों सबने।
देश-विदेश में और सभी जगह।
हमें एकत्वभाव से-एकता?
एकता, ऊपर-ऊपर की नहीं!
तो समता?
तो समता यानि एक-दूसरे का सह लो।
दो-तीन आपस-आपस में भी, भेदभाव नहीं।
तो संवादिता!
यह आज का सूत्र है।
महाराज और स्वामी खूब-खूब बल दें, खूब सूझ दें।
आज से नए जन्म के रूप में—
हरिप्रसादस्वामिजी को अकेले में—
चार कान में पूछना, प्रार्थना करके–पांच मिनिट।
दयालु! आप क्या प्रेरणा दे रहे हो, वैसा ही जीना है।
तुम्हारी मान्यता (के मुताबिक) नहीं–मान्यता (के मुताबिक) नहीं।
हमारे वो, एक थे–खेंगारजीभाई,

उसे शादी करनी थी।
तो कोई दो जनों ने मना किया–चंपकभाई सेठ ने;
कि अब शादी नहीं करनी चाहिए।
तुम्हें सोलह साल का तो लड़का है–वजुभाई सेठ की तरह।
लेकिन, उसने (पहले से ही) सोच रखा था–प्रिकन्डीशनिंग।
शास्त्रीजी महाराज को पूछने गया–बापा! यूं (अब) शादी कर सकता हूँ?
तो बोले–चालीस वर्ष के अन्दर हों, तो कर सकते हैं, वर्ना तो नहीं।
अब, चालीस साल पूरे होने में तीन ही दिन बाकी थे।
सो, उसने क्या किया?
एक दम साबरकांठा जाकर किसी को कहा–
कल ही कल में शादी का पक्का करवा दो।
क्योंकि–दूसरे दिन से ग्रहण लग रहा है–फिर बाद में धनारक लग जाते हैं।
फिर उसी दिन उसे बुला कर कहता है–
मुझ पर शास्त्रीजी महाराज की बड़ी कृपा है
और
अनुग्रह कि 'आई हैव ट्वेल्व चिल्ड्रन'!
ऐसी प्रसन्नत हमें नहीं चाहिए।
आप महामुक्त हो या जो कुछ (भी) हों,
कनिष्ठ में से मध्यम में जाने के लिए एक ही सूत्र है।
कनिष्ठ मुक्त में से, पप्पाजी ने जैसे पूछा कि—
मध्यम में—ब्रह्मस्वरूप होने में—
(जिसे) तुम 'स्वरूप' मानते हो उसके मिले हुए कोई भी दो जने,
तुम, जिसे स्वरूप मानो—मानना ही पड़ेगा।
हरिप्रसादजी, पप्पाजी, काकाजी, स्वामिजी–किसी को भी मानते हो,
उसमें रहे महाराज – स्वामिनारायण—
जोगी महाराज सर्वोपरि–जोगी महाराज सर्वोपरि, शास्त्री महाराज–महाराज!
वो गुरुहरि में, गुरु (ने) अखंड हरि को रखा है)—इसलिए।
वो गुरुहरि को मिले हुए दो जने होंगे।
अभी हरिप्रसादस्वामिजी को तत्त्व से—जैसे हैं वैसे पहचानने हों

यह गुणातीत का वचन है—
तो रमणभाई जैसे भगतराज हों,
ऐसे कोठारी—प्रेमस्वामी हैं।
यदि तुम उनका समागम करोगे
और
उनके प्रति दिव्यभाव रखोगे,
तो उनके अनुग्रह से–उनके खुश होने से प्रसन्नता प्राप्त होगी।
यह अनुग्रह से भी बढ़ कर है।
तो तुम तत्काल-तत्काल यानि तत्काल।
मध्य 7 और मध्य 63 मध्य 7 और मध्य 63।
अति सेवा, यानि कि—
मनमानी छोड़ दो, टोटल-टोटल-टोटल।
(प्रभु!) तुझ में से आए वही करना है।
व्यक्त, फिर दूसरी बार प्रार्थना।
तीसरी बार सूझेगा-अनुवृत्ति प्रगटेगी।
ब्रह्मनियंत्रित समाज है, उसकी सूझ पड़ जाए।
दोबारा मिलें, तब इस संदर्भ में,
जो सच में सेकेन्ड लाईन ऑफ लीडरशीप में सिलेक्टेड हो ऐसे,
हम इकट्ठे होकर चैतन्य भूमिका में ही अखंड रहकर-
'जहां देखें वहां रामजी' वाला कार्य करना है।
हमारी पूर्ण विजय है–अभी (केवल) विजय है।
दूसरा कलश सुहृद्भाव का—
बापा की जयंती–फिर शताब्दी मनाई जाए
(तब) इसी तरह ही हर एक इकट्ठे होकर-मिलजुल कर
देश-विदेश में सभी जगह,
इस लोक में और परलोक में भी सभी जगह-
सभी महामुक्त आएंगे।
बापा भी कहते–दूसरे साधु में दूसरी जगह चौंसठ लक्षण;
ये जोगी में पैंसठ हैं–ये जोगी में पैंसठ।

मैं भी उसके पास हार जाऊँ।
महाराज कहते—मैं चिंतामणि,
तुम भी चिंतामणि, भगवान सिद्ध करो।
लेकिन, **यह गुणातीत परम चिंतामणि!**
परम तत्त्व से वह आपको पहचान कराएग।
मुश्किलें बिलकुल हावी नहीं होंगी।
महाराज और स्वामी-ऐसे एकत्त्वभाव से–
पांच मिल कर–भेदभाव नहीं
और
कोई भी भक्त की टीका-चर्चा में बिलकुल नहीं पड़ना—
बिलकुल नहीं—(उन्हें) मिला हुआ और प्रसन्नता वाला।
तो, तुम तीसरे में से—कनिष्ठ में से मध्यम में आ जाओगे।
आखिर तुम भी स्वरूप हो जाओगे।
बापा का संकल्प–सभी को बनाने का;
तुम भी ऐसे हो जाओ, हमें ईर्ष्या नहीं है।
पप्पाजी और हम अब ऐसे रिटायर में—नेपथ्य में जाएंगे।
धन्य-धन्य योगी तुम्हें–करोड़ों वंदन हो, तुझे धन्य!
भेदभाव में पड़ना नहीं,
कि—यह बड़ा और वह छोटा।
यहाँ छोटे से छोटा वह बड़ा। यहाँ बड़े से बड़ा (अपने आपको माने) वह मरा।
छोटे से छोटा, सेवक का सेवक झुकता रहे।
दो-पाँच जनों के साथ तो सेवकभाव से वर्त कर देखो।
तो तुम भी स्वरूप हो जाओगे।
महाराज और स्वामी–
आज मुझे बहुत उमंग है, वाह-वाह! इतना भाव!
एक-एक जन एक-एक लाख के बराबर हो।
कितने लाख की सभा हुई?
समझदार!
तो महाराज और स्वामी खूब-खूब बल दें।

मेरे बोलने में हमेशा ऑथेन्टीसिटी होगी,
मेरे बोलने में सिंह की गर्जना ही होगी।
क्योंकि–मैं गीदड़ का बच्चा नहीं, मैं सिंह का ही बच्चा हूँ।
और
ऐसे प्रमाणित सिंह–**हम सभी इकट्ठे होकर काम करें।**
कुछ भी कमी हो, कुछ भी परेशानी आए,
तो दो-पांच मिल कर प्रार्थना करेंगे।
तुमने कुछ भी युगधर्म बदला हो,
तो सनातन धर्म—उसकी सिद्धि यहां पर ही है।
निर्मलस्वामिजी और उन्हें भी यहां इसलिए ही भेजा है।
निर्दोषबुद्धि—निर्दोषबुद्धि और सुहृद्भाव।
संप, सुहृद्भाव और एकता, गुणातीत ज्ञान का नवनीत–
वह निर्दोषबुद्धि सभी को आसानी से दृढ़ हो जाए,
यही गुरुचरणों में प्रार्थना।
बोला–करा माफ करना, बोला–करा माफ करना।
मुझे ऑथेन्टिक बात करने की खूब आदत है।
मेरे दिल में इतना ही है कि जिनके लिए बोला हूँ,
उनके लिए खूब-खूब मैं प्रार्थना करूं।
महाराज सभी को सूझ देना-यही प्रार्थना।
जय स्वामिनारायण!

दिल्ली और पंजाब से आए मुक्तों के लिए
प.पू. काकाजी द्वारा हिन्दी में बरसाए आशीर्वाद

(आज जो) बातचीत करी.....हिन्दी-पंजाब से जो आये हैं
वे समझ नहीं पाये होंगे।
(क्योंकि वो गुजराती भाषा समझे नहीं होंगे।)
आज हम तीनों ही और इस प्लेटफार्म पर बैठने वाले सभी में से
बापा ही बोल गए हैं।
हरिप्रसादस्वामिजी ने जो कहा–
हमारा धूमकेतू का (एक) मुकुटमणी है यह, धूमकेतू है;
सो इसमें बुद्धि को बिलकुल नहीं लगाना।
बुद्धि इसलिए नहीं लगानी कि–
आप लोगों ने पक्का मान लिया है कि ये लोगों (को) हमने एक्सेप्ट कर लिया है।
और
हमने भी आपको एक्सेप्ट कर लिया है। अब सुख-सुख से करो।
महाराज के समय पर एक मुसलमान था।
ब्रह्मानंदस्वामी को उसकी क्रिया पसंद नहीं आती थी।
तो, वो महाराज को बोले कि–
महाराज, एक दिन मुझे अधिकार दे दो, मैं ज़रा आज (सारा) कारोबार करूं।
सब को मैं खाना दूंगा।
तो, महाराज तो जानते थे कि–
यह ब्रह्मभट्ट क्या (करने वाला है)–बारोट?
निष्कामधर्म का राजा–ब्रह्मानंदस्वामी, यति जैसे, हं!
भीष्म पितामह से भी परे–ऐसे।
लेकिन, गुणातीत को नहीं पहचाना–इसलिए महाराज में थोड़ा सा मनुष्यभाव, और
मुक्तानंदस्वामी (को) भी साथ में ले पड़ा था।

सो, महाराज बोले–यह ठीक नहीं रहेगा।
तो कहने लगा–नहीं, नहीं–विष्णु को सबका पालन करने का
जो अधिकार दिया है–वो अधिकार आज मुझे दे दो।
आखिर महाराज बोले–तथास्तु!
तो, (उसने एक) मुसलमान को–विष्णु भगवान के अधिकार से खाना नहीं दिया।
वो बोला, रे अल्लाा-अल्ला! अरे! महाराज–महाराज आप जहां भी हो प्रगट होओ।
फिर दूसरे दिन महाराज बोले–भई! अधिकार वापिस लाओ।
क्यों? सात दिन के लिए कहा था ना!
अरे भई! तुमने (वो) मुसलमान को क्यों खाना नहीं दिया?
(ब्रह्मानंदस्वामी) बोले–वो कुसंगी है।
उस समय महाराज ने ये लिखा है।
यह बात शास्त्रीजी महाराज ने बताई थी।
हम दो थे, दस साधु व सभा में हम दो!
मैं और हर्षदभाई!
वो साढ़े नौ बजे आये।
और यहां बुआ है–मणीबुआ है, वो सभा में आती थीं।
पैंतालिस बार सत्संगी जीवन की परायण करने के बाद,
महाराज कहते हैं कि (भले) ये कुसंगी है; पर तुमने क्यों फर्क किया?
वो सभा में आया है ना? ये मेरी सभा में आया है ना?
तो, वो सूत्र महाराज ने इसलिए लिखा है,
यह शास्त्रीजी महाराज ने बताया था।
मैंने एक दिन पूछा–शास्त्रीजी महाराज!
मेरी माँ का कुछ दान पुण्य कर लें–दीवालीबा उनका नाम था।
तो हम दो (जनें) सत्संग में
और
हमारा यह ज्ञानस्वरूप–इधर आया है–वो।
वो जल्दी-जल्दी आ जाता।
तो बोला–भई! यह छः-सात बजे आता है, हं।

(तुम) ज़रा जल्दी तो आओ भई–काकाजी को बोलो, दादुभाई को बोलो–
उस समय बोलते थे।
हम बैठे ही (रहे) हैं–ऐसे दस!
शास्त्रीजी महाराज; योगीजी महाराज पढ़ते और वो (शास्त्रीजी महाराज) समझाते।
वो बोला–
ये सारी बातचीत, भगतजी–जागास्वामी के अंग की–
आप लोगों के लिए है।
कोई समझता नहीं था।
तो, उस समय मैंने पूछा–ये वेदरस क्यों नहीं पढ़ते?
बोले कि–वेदरस में अहम् के ऊपर चोट है।
आज हरिप्रसादस्वामिजी ने भी जो कहा–
वह आप सबकी ओर से साक्षी बन कर, आपके लिए बोला है।
यह गुणातीत ज्ञान की हमारी प्रणालिका है।
नम्रता से, सरलता से।
लेकिन आप दिमाग मत लगाना।
और
ये संत लोग–जो उनके वचन से हुए हैं,
वो भी मत समझना कि–
उनमें (कोई) डिफेक्ट है और ये हैं।
यह एक हमारी–हमारी यह एक रीति है।
महाराज ने भी (गुरु) रामानंदस्वामी की नौ महिने तक सेवा करी थी।
कृष्ण भगवान ने (गुरु) सांदीपनी की सेवा करी थी।
सो, हम आप लोगों को भी यही सिखाते हैं।
योगीजी महाराज भी पच्चीस-पच्चीस दंडवत्–
स्वामिनारायण भगवान (की मूर्ति) को वड़ताल में करते थे।
मैंने एक दिन पूछा–बापा इतने क्यों?
वे बोले कि यह तो कुछ नहीं है, कम हैं।
ये महाराज ने पृथ्वी पर आकर क्या बख़्शिश दी? गुणातीत!

(बापा कहते)–मुझे डंडे से मारने वाले, मेरे हाथ तोड़ डालने वाले–
विज्ञानस्वामी को धन्य है,
कि–
कुछ भी हो, उन्होंने मुझे शास्त्रीजी महाराज की पहचान करवाई
और
मुझे अक्षरपुरुषोत्तम में लाये।
वाह-वाह!
वो–उनके पास कोई भाषा–कोई लेंग्वेज–कोई भावना!
तो, यह बुद्धि का विषय नहीं है, हृदय की भावना।
मैंने ढ़ाई मिनिट से चार मिनिट-बंगाली हिसाब से लिया।
आप सभी–पंजाब से, महाराष्ट्र से
उधर से, देश विदेश से, अमेरिका से आये हो।
हमारे
महेन्द्रभाई, दिनकरभाई, राजुभाई और हमारे शर्मिष्ठा बहन-वो,
हमारी आज जो कुछ जिसने सेवा करी–
(सिर्फ) गुणातीत ज्योत महिला केन्द्र को ही नहीं,
(बल्कि) सारे गुणातीत समाज को पहुँचती है।
(जिसने सेवा) ना करी हो, वो पच्चीस महापूजा की सेवा तो दे देना।
इतनी मैं भिक्षा माँगता हूँ!
(वह) इसलिए कि आपके जीवन में जो भी गंदगी हो, वो भी निकल जाए
और उसकी जिम्मेदारी
काकाजी, पप्पाजी, बा, हरिप्रसादजी, अक्षरविहारीजी, हमारे अमृतबापा,
हमारे कोठारी–प्रेमस्वामी, मुकुंदजीवन,
हरिभाई साहेब, जशभाई साहेब जैसे हम सभी लेते हैं
और
हे महाराज! हे स्वामी!
अब एक मिनिट धून करके पूरा हो जाएग।
हमारे रमेशभाई की भी तबियत अच्छी हो जाए।

कोई और बीमार हुआ हो,
हमें स्वभाव बाधारूप ना हो
और
आपके चरणों में 'बालक' बन कर
नम्र प्रार्थना करता हूँ। अभी शांतिभाई मंत्र बुलवाएंगे,
उसके साथ यह (पूर्णाहुति) हो जाएगी।
'सामने आया मुक्त–सामने आया मुक्त'–
पहली बार और दूसरी बार नज़रअंदाज कर दो;
तीसरी (बार) आपको जो देखना हो, वो देखो।
इतना तो जरूर करें।
और
योगीजी महाराज की जयंती तो बहुत दूर है,
लेकिन नेक्स्ट टाईम–नेक्स्ट ईयर,
जब भी हम ऐसा ही उत्सव मनाएं
तब हम सब लोग मिलजुल कर
भगवान, शास्त्री महाराज और योगी महाराज की यह विरासत का–
गुणातीत समाज का ये झंडा, आकाश में जो लहरा रहा है, वह लहराता रखें
और
वो कलश—सुहृदभाव का—
रायशी को भी कहा था–मुंबई में,
सुहृद्भाव का कलश चढ़ाओ।
तो वह कलश चढ़ाने के लिए–
फकीरभाई और हमारे भगतजी सभी, सभी साथ देकर यही काम करें।
(मुझे) शर्मिष्ठा बहन और सूर्यकांतभाई अमेरिका वाले व
दिनकरभाई ने जो सेवा दी है।
वो आज गुणातीत ज्योत को
कांतिभाई के हाथों से हम अर्पण कर देते हैं।
बाकी जिस–जिसकी इच्छा हो,

श्रद्धा-श्रद्धा के मुताबिक, कोई आग्रह नहीं है–
वह सब गुणातीत ज्योत को–
आज इतना-इतना हमारे लिए परिश्रम किया, इतनी आज दौड़ाभागी करी और
पप्पाजी को कहा–मैंने कहा–
मीठा दलिया खिलाओ, मीठा दलिया–हं!
तो बोले कि–नहीं, नहीं।
इतना अच्छा दिन है, छोटे भाई का।
तो ये बड़े भाई–बड़े भाई के चरणों में प्रार्थना–
आपको तकलीफ पड़ी हो,
हमारे लिए रातोरात यह सब डेकोरेशन करना पड़ा,
वो बहनों को भी हमने तकलीफ दी है,
उन सभी को एकांतिक धर्म—सरलता से सिद्ध हो जाए,
यही गुरुचरणों में प्रार्थना!
धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।

गुणातीत समाज की जय